रचना

अंक 18 वर्ष 2024

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला
हैदराबाद

दूरदर्शिता

रक्षा तंत्रों के लिए पदार्थपरक समस्त समाधानों के लिए एक उत्कृष्ट केंद्र के रूप में उपस्थिति।

लक्ष्य

पदार्थों के मौलिक तथा आनुप्रायोगिक क्षेत्रों में शोध द्वारा नवीन पदार्थों और निर्माण-तकनीकों के विकास तथा संबद्ध पदार्थ-अभियंत्रण को आगे बढ़ाना।

गुणवत्ता नीति

- उत्कृष्ट पदार्थों, प्रौद्योगिकी प्रणालियों एवं संबंधित उत्पाद अभियांत्रिकी का अपने उपभोक्ताओं की आवश्यकता के अनुसार विकास करना।
- अनुसंधान और आधारभूत संरचना तथा मानव संसाधनों के उन्नयन के जरीए आवश्यकतानुसार अनुसरण एवं गुणवत्ता में लगातार सुधार करना।

डी. एम. आर. एल. की वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका

रचना

अंक-18, वर्ष 2024

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल)
कंचनबाग, हैदराबाद – 500058

संपादक मंडल

संरक्षक

डॉ. आर बालमुरलीकृष्णन
उत्कृष्ट वैज्ञानिक व निदेशक

संपादक

अमित कुमार, वैज्ञानिक - एफ
पवन कुमार, सहायक निदेशक (रा.भा.)
जय प्रकाश, तकनीकी अधिकारी – ए
आशीष कुमार मिश्र, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

विशेष आभार.
फोटोग्राफी अनुभाग

नोट – इस पत्रिका में लेखकों के व्यक्त विचारों के लिए वे स्वयं उत्तरदायी हैं। संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

डॉ. समिर वी. कामत
Dr. Samir V. Kamat

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
Government of India

सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग
एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ
Secretary, Department of Defence R&D
&
Chairman, DRDO

संदेश

यह बड़े हर्ष का विषय है कि **रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल)** अपनी वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका **'रचना'** अंक-18 का प्रकाशन करने जा रही है। गृह-पत्रिका **'रचना'** का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक उत्तम प्रयास के रूप में देखा जा सकता है।

जैसा कि विदित है भारत एक बहुभाषी देश है तथा यहां कई भाषाएं बोली जाती हैं। हिंदी भाषा का विकास देश की संपर्क भाषा के रूप में हुआ है। ऐसी स्थिति में देश को एकता के सूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने ही किया है। अतः हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपनी भाषा के विकास में पूर्ण योगदान दें तथा कार्यालयों में प्रेरणा और प्रोत्साहन के मंत्र को अपनाते हुए सरल हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

इस अवसर पर मैं प्रयोगशाला संरक्षक, प्रकाशक मंडल तथा सभी रचनाकारों को बधाई के साथ पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं देता हूं।

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 04 **फरवरी ,2025**

समिर कामत
(डॉ. समिर वी. कामत)

रक्षा मंत्रालय, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग, डीआरडीओ भवन, नई दिल्ली -110011
Ministry of Defence, Department of Defence R&D, DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Phone : 011-23011519, 23014350 फैक्स/Fax : 011-23018216 ई-मेल/E-mail : secydrdo@gov.in

आर वी हरा प्रसाद
विशिष्ट वैज्ञानिक एवं
महानिदेशक (एनएस एवं एम)

R V Hara Prasad
Distinguished Scientist &
Director General (NS & M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

रक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF DEFENCE
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
DEFENCE RESEARCH & DEVELOPMENT ORGANISATION

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत हर्ष हो रहा है कि विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी **रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल), हैदराबाद** अपनी वार्षिक गृह पत्रिका **'रचना'** का प्रकाशन करने जा रही है। यह रचना का 18वां अंक है। रचना का प्रकाशन यह दर्शाता है कि राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे वैज्ञानिक, अधिकारीगण एवं अन्य कार्मिक काफी सजग हैं।

इस तथ्य से कोई अछूता नहीं है कि भारत जैसे विशाल राष्ट्र में संपर्क का मुख्य माध्यम हिंदी ही है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी नीति-नियमों के अनुपालन के साथ पत्रिका में अपनी प्रस्तुति कर कार्मिकों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को दर्शाने का यह सुनहरा अवसर होता है तथा राजभाषा हिंदी को समृद्ध और सुदृढ़ बनाने में वे अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

मैं **'रचना'** के प्रकाशन से जुड़े सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को उनके अथक प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देता हूं तथा इस अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

स्थान : नई दिल्ली
दिनांकः 4/2/2025

आर. वि. हरा प्रसाद
(आर वी हरा प्रसाद)

डॉ. मनु कोरूला
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं
महानिदेशक (आर. एण्ड एम.)
Dr. Manu Korulla
Outstanding Scientist &
Director General (R & M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

भारत सरकार
रक्षा मंत्रालय
अनुसंधान तथा विकास संगठन
101, डी आर डी ओ भवन, राजाजी मार्ग
नई दिल्ली-110 011, भारत
Government of India
Ministry of Defence
Defence Research & Development Organisation
101, DRDO Bhawan, Rajaji Marg
New Delhi-110 011, India

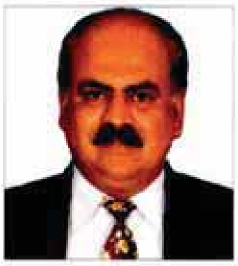

संदेश

मेरे लिए यह खुशी की बात है कि है कि **रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला' (डीएमआरएल), हैदराबाद** द्वारा हिंदी गृह पत्रिका **'रचना'** का 18वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

हिंदी भाषा के लिए जन-जन में अगाध प्रेम है। हिंदी ने जिस गति से अपना विकास किया है, वह अपने आप में एक मिसाल है। आज विश्व में हिंदी की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है, चाहे कोई भी उद्यम क्षेत्र हो, हिंदी को प्राथमिकता दी जा रही है। अब हिंदी विज्ञापन की भाषा के साथ-साथ विज्ञान के क्षेत्र की भाषा भी बन गई है, समय के साथ संपर्क साधने से लेकर आकर्षक अभिव्यक्ति के गुणों को अपनाकर हिंदी लोकप्रिय होती जा रही है। आज हमारे पास हिंदी में टंकण एवं अनुवाद के लिए कई सॉफ्टवेयर टूल मिल जाएंगे। कहा जा सकता है कि हिंदी के बढ़ते दायरे को देख कर इसमें संभावनाएं खोजी जा रही हैं।

अतः ऐसे में केंद्रीय सरकार के जिम्मेदार कार्मिक होने के नाते हमारा भी यह कर्तव्य है कि हम भी राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रमों में उल्लिखित दिशानिर्देशों का अनुपालन करते हुए अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें।

इस अवसर पर मैं **'रचना'** के अंक-18 के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल तथा पत्रिका में अपने ज्ञान और विचारों को अभिव्यक्त करने वाले समस्त कार्मिकों को बधाई देता हूँ।

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 03/02/2025

मनु कोरूला
(डॉ. मनु कोरूला)

दूरभाष/Phone : 011-23011860 फैक्स/Fax : 011-23015395
ई-मेल/E-mail : dgrm.hqr@gov.in

सुनील शर्मा
उत्कृष्ट वैज्ञानिक
एवं
निदेशक (डी पी ए आर ओ एंड एम)

Sunil Sharma
OUTSTANDING SCIENTIST
&
DIRECTOR (DPARO&M)

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अ.स.प.सं./DO No.
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organisation
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय
Directorate of Parliamentary Affairs, Rajbhasha and Organisation & Methods (DPARO&M)
'ए' ब्लॉक, प्रथम तल
'A' Block, First Floor
डी.आर.डी.ओ. भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Telephone: 23013248, 23007125
फैक्स/Fax: 23011133, 23013059

दिनांक/Dated : ....

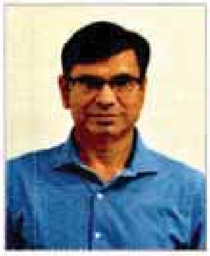

संदेश

रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला (डीएमआरएल) अपनी हिंदी **गृह-पत्रिका के 18वें अंक** का प्रकाशन कर रहा है। राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने के प्रयास में यह कदम प्रसन्नता का विषय है।

संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय अपने अधीनस्थ प्रयोगशालाओं में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति काफी सजग है तथा समय-समय पर इस संबंध में गृह-मंत्रालयों से प्राप्त नीति-नियमों एवं आवश्यक सूचनाओं के बारे में अवगत कराती है। मुझे इस बात की खुशी है कि हमारे प्रयोगशालाओं में हिंदी में रूचि लेकर वैज्ञानिकों व अन्य कर्मचारियों द्वारा अधिकांश कार्य स्वेच्छा से हिंदी में किया जाता है। ऐसा करके राजभाषा हिंदी के नियमों का अनुपालन होता है तथा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को गति मिलती है।

हिंदी पत्रिकाओं के माध्यम से हम प्रयोगशालाओं की विविध गतिविधियों व कार्यकलापों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आजकल हिंदी सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से हिंदी को बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। हमारी भी यह जिम्मेदारी है हम अपने कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग का दायरा बढ़ाने के लिए सरल हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

मैं गृह-पत्रिका **'रचना'** के 18वें अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूं तथा आशा करता हूं कि भविष्य में भी इसी प्रकार नई ज्ञानवर्धक जानकारियों के साथ पत्रिका का प्रकाशन किया जाएगा।

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक: 31/1/25

(सुनील शर्मा)

E-mail : sunil-sharma.hqr@gov.in

डॉ आर बालमुरलीकृष्णन
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक
Dr R Balamuralikrishnan
Outstanding Scientist & Director

सत्यमेव जयते

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research & Development Organisation
रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला
DEFENCE METALLURGICAL RESEARCH LABORATORY
कंचनबाग डाकघर, हैदराबाद – 500058
Kanchanbagh, Hyderabad - 500058

संदेश

मुझे **रचना** के 18वें अंक को प्रस्तुत करते हुए बहुत खुशी हो रही है, जो 'रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला' (डीएमआरएल), हैदराबाद की अडिग भावना, समर्पण और उत्कृष्टता का प्रमाण है। पिछले कई वर्षों से डीएमआरएल ने धातुकर्म विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उन्नति में निरंतर योगदान दिया है और राष्ट्र की रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अग्रणी सामग्रियों के विकास से लेकर महत्वपूर्ण उद्देश्य की परियोजनाओं को क्रियान्वित करने तक, डीएमआरएल की यात्रा नवाचार और उत्कृष्टता के निरंतर कार्यों से चिह्नित रही है।

रचना हमारे डीएमआरएल समुदाय के सामूहिक प्रयासों और साथ ही रचनात्मक तकनीकी कौशल को दर्शाती है। यह उपलब्धियों का जश्न मनाने, ज्ञान साझा करने और सबसे महत्वपूर्ण रूप से प्रेरणा देने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। मैं इस अवसर पर डीएमआरएल के सभी योगदानकर्ता अधिकारियों और कर्मचारियों जिन्होंने लेखों, संपादकों के माध्यम से योगदान दिया है, को हार्दिक बधाई देता हूँ। इसके साथ में हर एक व्यक्ति के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस प्रकाशन को जीवंत बनाने के लिए ईमानदारी से काम किया है।

इन पत्रों को पलटते हुए, आप डीएमआरएल के सिद्धांतों को परिभाषित करने वाले नवाचार, दृढ़ता और टीमवर्क की कहानियों से प्रेरणा पा सकते हैं। इस पत्रिका को न केवल हमारी प्रगति का दस्तावेजीकरण करने दें, बल्कि भविष्य के लिए विचारों को भी प्रज्वलित करें।

आपके निरंतर सहयोग के लिए धन्यवाद और मुझे आशा है कि आपको इस अंक को पढ़ने में उतना ही आनन्द आएगा जितना की टीम को इसे तैयार करने में आया।

दिनांक: २४ फरवरी 2025

(डॉ आर. बालमुरलीकृष्णन)

Tele: (Off.) +91-40-24340681, +91-40-24340233, Fax: +91-40-24340080, (Res.) +91-40-24072186
E-mail: director.dmrl@gov.in

संपादक की कलम से

डीएमआरएल की हिंदी गृह-पत्रिका **रचना** के **18वें अंक** को प्रस्तुत करते हुए मुझे खुशी हो रही है। इस पत्रिका में हमारे वैज्ञानिकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने ज्ञान, अनुभव व जानकारी से ओत-प्रोत विषयवस्तुओं को परोसने का प्रयास किया है। निश्चित रूप से उनकी कार्यकुशलता, सकारात्मकता और परिश्रम से इस पत्रिका को बेहतर रूप देने का प्रयास किया गया है।

छलकते हुए गागर को देखकर विचार आया कि न जाने उसने कितनों की प्यास बुझाई होगी! इन विचारों को गति देते हुए अग्रसर हुआ तो सोचा कि जब उद्देश्य की पूर्ति हेतु हम अपनी मंजिल की ओर निकल पड़ते हैं तो यह कहा नहीं जा सकता कि मंजिल तक पहुँच पाएंगे या नहीं, या फिर उसके लिए कितना वक्त लगेगा! किंतु परिणाम की इच्छा किए बिना यदि मानव केवल प्रयास करे तो शायद सफलता पाने पर उसे अधिक खुशी होगी!

मुझे इस बात की खुशी है **रचना** के इस अंक के प्रकाशन के लिए संरक्षक का मार्गदर्शन निरंतर रूप से मिला। मैं इस दिशा में निदेशक, डीएमआरएल का विशेष रूप से आभारी हूँ। इसके साथ राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में रूचि लेकर दैनिक रूप से उत्साह संग कार्य करने वाले कार्मिकों की भी सराहना करुँगा, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से योगदान देने वाले कार्मिकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, साथ ही उन समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार प्रकट करता हूँ जो राजभाषा की विविध गतिविधियों का हिस्सा बने, गतिविधियों व आयोजनों पर अपने विचारों व अनुभवों से हमें अवगत कराया। उनमें हिंदी के प्रति प्रेम जागृत हुआ होगा, ऐसा मेरा मानना है। मुझे उम्मीद है कि रचना का यह 18वां अंक पाठकों के मस्तिष्क पटल को कुछ नई-सोच व नई-खोज की ओर प्रेरित करेगा। अतः सदैव प्रयासरत् रहने की मंशा के साथ **रचना का 18वां** अंक आपके सामने प्रस्तुत है।

उम्मीद करता हूँ कि पाठकगण आगामी अंकों में अभिवृद्धि हेतु अपने विचारों से अवगत कराएंगे.....

पवन कुमार
सहायक निदेशक (रा.भा.)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	आत्मनिर्भर भारत अभियान और इसके फायदे	राजेश कुमार वैज्ञानिक-ई	1
2.	मौसम (कविता)	डॉ. जलज कुमार वैज्ञानिक-एफ	4
3.	राजभाषा हिंदी : चुनौतियाँ एवं समाधान	डॉ. आशीष पाठक वैज्ञानिक-ई	5
4.	तितली (कविता)	प्रियंका प्रियदर्शिनी बेहेरा वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी	8
5.	मेरी बेटी (कविता)	प्रियंका प्रियदर्शिनी बेहेरा वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी	8
6.	पेरिस ओलंपिक - 2024 में भारत	संजय सिंह पंवार भंडार सहायक-ए	9
7.	उम्र चालिस की (कविता)	निशांत मनिष तकनीशियन-बी	14
8.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता	प्रियदर्शी सिंह तकनीकी अधिकारी-ए	15
9.	समाचार पत्रों की भूमिका	अभिषेक खरे तकनीशियन-ए	16
10.	मातृभूमि (कविता)	जगबीर तकनीकी अधिकारी-ए	19
11.	भारत के दस सर्वोत्तम मंदिर	डॉ. जितेन दास वैज्ञानिक-एफ	21
12.	छत्रपति शिवाजी	अनिल रोहिदास बुर्डे तकनीशियन-बी	26

13.	परग्रही मानव	जय प्रकाश तकनीकी अधिकारी-ए	29
14.	अनुशासन	मोनु कुमार भंडार सहायक-ए	31
15.	योग और इसके लाभ	विवेक कुमार मिश्रा वैज्ञानिक-बी	33
16.	हिंदी दिवस	एम. स्वप्न कुमारी वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक	37
17.	शंख के कुछ तथ्य	डॉ. जितेन दास वैज्ञानिक-एफ	38
18.	हमारे दैनिक जीवन में विज्ञापन	पवन कुमार सहायक निदेशक (रा.भा.)	39
19.	प्रशासनिक हिंदी	आशीष कुमार मिश्र कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	44
20.	डी.एम.आर.एल. में राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ		47
21.	डी.एम.आर.एल. गतिविधियों की झलकियाँ		49

आत्मनिर्भर भारत अभियान और इसके फायदे

राजेश कुमार
वैज्ञानिक – ई

विश्व में कोरोना महामारी के संकट से लड़ने और देश के आंतरिक स्थिति बनाये रखने और इसे अच्छा करने के लिए भारत ने खुद को आत्मनिर्भर भारत बनाने का फैसला किया है। भारत काफी मात्रा में चीजों का आयात विदेशो से करता था, पर इस महामारी के चलते सारे विश्व के आयात-निर्यात पर भारी असर पड़ा है, और इस स्थिति को सामान्य और देश की हर आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनना बहुत आवश्यक है।आत्मनिर्भर भारत अभियान माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा परिकल्पित नये भारत का दृष्टिकोण है। 12 मई 2020 को, पीएम ने राष्ट्र को आत्मनिर्भर भारत अभियान की शुरुआत करते हुए एक स्पष्ट आह्वान किया और भारत में COVID-19 महामारी से लड़ने के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद के 10% के बराबर 20 लाख करोड़ रुपये के विशेष आर्थिक और व्यापक पैकेज की घोषणा की।इसका उद्देश्य देश और उसके नागरिकों को हर मायने में स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाना है। उन्होंने आगे आत्मनिर्भर भारत के पाँच स्तंभों - अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढाँचे, प्रणाली, जीवंत जनसांख्यिकी और माँग को रेखांकित किया। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत सात क्षेत्रों में सरकारी सुधारों और समर्थनों की घोषणा की। सरकार ने आत्मनिर्भर लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में कृषि के लिए आपूर्ति श्रृंखला सुधार, तर्कसंगत कर प्रणाली, सरल और स्पष्ट कानून, सक्षम मानव संसाधन और मजबूत वित्तीय प्रणाली जैसे सुधार किये।

आत्मनिर्भर भारत बनाने का अभियान

कोरोना काल में आपदा को अवसर में बदलने के लिए प्रधानमंत्री ने देश-वासियों से आह्वान किया था। संकट की इस घड़ी मे सभी को आत्मनिर्भर बन राष्ट्र की सेवा और तरक्की में योगदान देने की अपील की। देश आत्मनिर्भर होगा, तभी इस संकट की घड़ी में हम राष्ट्र को तरक्की के लिए आगे खड़ा कर सकते है।

भारत प्राचीन काल से ही संसाधनों का देश रहा है। आजादी के बाद भारत की गरीबी और भुखमरी को देखते हुए महात्मा गाँधी ने देश को आत्मनिर्भर बनाने का सपना देखा था, पर उस स्थिति में सुविधाओं की कमी के कारण ये पूरी तरह से संभव न हो सका, लेकिन जहाँ तक हो सका लोगों ने खुद को आत्मनिर्भर बनाया। महामारी के इस संकट में फिर से महात्मा गाँधी के आत्मनिर्भरता के उस सपने को याद करते हुए प्रधानमंत्री ने अपील की। भारत मे संसाधनों की कोई कमी नहीं है और अब भारत किसी भी चीज का निर्माण करने मे सक्षम है, इसके लिए उसे किसी और से मदद लेने की आवश्यकता नहीं है।

आत्मनिर्भर भारत बनने का तात्पर्य है कि हमारे देश को हर क्षेत्र में खुद पर ही निर्भर होना होगा। भारत को देश में ही हर वस्तु का निर्माण करना होगा। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है कि भारत के संसाधनों से बनी वस्तुओं को भारत में ही उपयोग मे लाना है। आत्मनिर्भर भारत से अपने यहाँ के उद्योगों मे सुधार करना

और युवाओं के लिए रोजगार, गरीबों के लिए पर्याप्त खाना ही इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है। प्रधानमंत्री मोदी ने 4 जुलाई, 2020 को ऐप के मामले में आत्मनिर्भर बनने के लिए 'ऐप इनोवेशन चैलेंज' लॉन्च किया। एप इनोवेशन चैलेंज का मंत्र है 'भारत में भारत और विश्व के लिए बनाओ' (मेक इन इण्डिया फ़ॉर इण्डिया एण्ड द वर्ल्ड)।

भारत आज पीपीई किट का विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक बन गया है। सीएसआईआर-एनएएल ने 35 दिनों के भीतर बाईपैप वेण्टिलेटर का विकास किया। वस्त्र समिति (मुम्बई) ने पूर्ण रूप से स्वदेशी डिज़ाइन और 'मेक इन इण्डिया' वाला पीपीई जाँच उपकरण बनाया। बिजली क्षेत्र में ट्रांसमिशन लाइन टॉवर से लेकर, ट्रांसफार्मर और इन्सुलेटर तक देश में ही बनाने पर जोर दिया गया है। सभी सेवाओं में सरकारी खरीद व अन्य के लिए 'मेक इन इण्डिया' नीति में संशोधन किया गया है। रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता के लिए 'मेक इन इण्डिया को बढ़ावा दिया। एक निश्चित समयावधि के भीतर आयात पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए हथियारों / प्लेटफार्मों की एक सूची को अधिसूचित किया गया। आयातित पुर्जों का स्वदेशीकरण किया जाएगा और इसके लिए अलग से बजट का प्रावधान किया जाएगा। आयुध निर्माणियों (ऑर्डनेंस फैक्ट्रियों) को कॉर्पोरेट का दर्जा दिया और उनको शेयर बाजार में सूचीबद्ध किया जाएगा।

आत्मनिर्भर भारत के फायदे

यदि हमारा भारत आत्मनिर्भर बनता है तो देश को इससे कई सारे फायदे होगें जो लोगों और देश की तरक्की मे बहुत सहायक होंगे।

- आत्मनिर्भर भारत से हमारे देश में उद्योगों की संख्या मे वृद्धि होगी।
- हमारे देश को और देशों से सहायता कम लेनी होगी।
- हमारे देश मे रोजगार के अधिक अवसर पैदा होंगे।
- इससे देश मे बेरोजगारी के साथ-साथ गरीबी से मुक्ति मे सहायता मिलेगी।
- भारत की आर्थिक स्थिति काफी मजबूत हो सकेगी।
- आत्मनिर्भर बनने के साथ भारत चीजों का भंडारण काफी अधिक कर सकता है।
- देश आगे चलकर अन्य देशों से आयात कम और निर्यात ज्यादा कर सकेगा।
- आपदा की स्थिति में भारत में बाहरी देशों से मदद की माँग कम होगी।
- देश मे स्वदेशी वस्तुओं का निर्माण कर देश की तरक्की को शीर्ष तक ले जाने मे सहायता मिलेगी।

आत्मनिर्भर भारत बनने के महत्वपूर्ण बातें

आत्मनिर्भर भारत की घोषणा के तहत भारत के प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भरता के लिए पाँच महत्वपूर्ण चीजें बातायी है।

1. इंटेंट यानी इरादा करना।
2. इन्क्लूजन या समावेश करना।

3. निवेश या इन्वेस्टमेन्ट करना।

4. इन्फ्रास्ट्रक्चर यानी सार्वजनिक ढांचे को मजबूत करना।

5. नयी चीजों की खोज करना।

आत्मनिर्भर भारत बनने का अवसर

कोरोना महामारी के दौरान कुछ हद तक हमने आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार किया है और बिना अन्य देश की मदद से इस महामारी से लड़ने के लिए हमने देश में ही चीजों का निर्माण करना शुरु कर दिया है।

जहाँ हमने पीपीई किट, वेन्टिलेटर, सेनेटाइजर और के.एन.-95 मास्क का निर्माण अपने देश में ही शुरु कर दिया है। पहले यही चीजें हमे विदेशों से मँगानी पड़ती थीं। इन सभी चीजों का निर्माण भारत मे करना ही आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ने का पहला कदम है। इनके उत्पादन से हमें अन्य देशों की मदद भी नही लेनी पड़ रही है, और भारत आत्मनिर्भरता की ओर आगे कदम बढ़ा रहा है।

निष्कर्ष

आत्मनिर्भरता के लिए सरकार के आह्वान ने एक नया महत्व हासिल कर लिया है और विश्व जनसंख्या का लगभग छठा हिस्सा रखने वाले भारत जैसे देश के लिए आत्मनिर्भरता की प्राप्ति हेतु वस्तुतः सूक्ष्म वैश्विक अंतर्संबंधों तथा संभवतः और अधिक सघन वैश्विक नेटवर्क की आवश्यकता होगी। विश्वसनीय कनेक्टिविटी, सामग्री व घटकों के विविधिकृत स्रोत और लचीली वित्तीय एवं व्यापारिक व्यवस्था अब महज चर्चा के शब्द नहीं हैं, बल्कि एक रणनीतिक अनिवार्यता है जिसमें भारत के व्यापारिक समुदाय, विधि-निर्माता तथा सभी हितधारकों को शामिल करते हुए सभी की आम सहमति की आवश्यकता है। हमें भी इसमें अपना योगदान देकर आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करना होगा। हमें ज्यादा से ज्यादा स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने की आवश्यकता है। जिससे कि हम अपने देश को आत्मनिर्भर और अपने राष्ट्र को आगे बढ़ाने मे अपना योगदान कर सके।

मौसम

डॉ. जलज कुमार
वैज्ञानिक-एफ

मौसम! तुम कितने मौसमी हो गये,
बिन बुलाए आये,
बिन बताये चले गये ।
मौसम! तुम कितने मौसमी हो गये।।
आज खुश, कल गरज पड़े,
हम उदास, तुम मुस्कुराये?
मौसम! क्या तुम मौसमी हो गये?
क्या हमें देखते-देखते,
तुम ऐसे हो गये ?
मौसम! तुम कितने मौसमी हो गये!
परिवर्तन की बेला में,
पंचतत्व की खेला में,
हमारे सब्र-संघर्षों की रेला में,
क्या तुम इम्तिहान ले रहे?
मौसम! तुम कितने मौसमी हो गये!

राजभाषा हिंदी : चुनौतियाँ एवं समाधान

डॉ. आशीष पाठक
वैज्ञानिक-ई

संस्कृत से जन्मी है हिंदी, शुद्धता का प्रतीक है हिंदी। लेखन और वाणी दोनों को, गौरवान्वित करवाती हिंदी। उच्च संस्कार, वियिता है हिंदी, सतमार्ग पर ले जाती हिंदी। ज्ञान और व्याकरण की नदियाँ, मिलकर सागर स्रोत बनाती हिंदी।

- प्रतिभा गर्ग

किसी देश की प्रगति और सांस्कृतिक उत्थान एवं विकास में भाषा की अहम भूमिका होती है। विश्व में हजारों भाषाएँ बोली और समझी जाती हैं। हर देश को आगे बढ़ने के लिए उस देश की एक निजी भाषा होनी चाहिए जिससे सभी लोगों को जोड़ा जा सके। भाषा से देश की अभिव्यक्ति है। इसलिए कहा गया है कि वाणी के बिना मनुष्य और भाषा के बिना देश गूंगा है।

राजभाषा हिंदी : भारत देश में हिंदी राजभाषा के रूप में जानी जाती है यह देश के लिए गौरव की बात है क्योंकि हमारा देश विविधता का देश है, यहाँ अनेक धर्म, जाति एवं भाषा के लोग हैं। विभिन्न भाषाएं होते हुए भी आजादी के बाद दिनांक 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया। तब से 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रुप में मनाया जाता है। इस उपलक्ष्य में हिंदी से संबंधित बहुत से कार्यक्रम होते हैं जिसे देश एवं राज्य के कार्यालयों में भी विशेष रूप में मनाया जाता है।

हिंदी पर डॉ. जगदीश व्योम जी ने बहुत प्यारी कविता लिखी है जिसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है।

"माँ भारती के लाल का श्रृंगार है, हिंदी हिंदोस्ताँ के बाग की बहार है, हिंदी घुट्टी से साथ घोल के माँ ने पिलायी थी, स्वर फूट पड़ रहा, वही मल्हार है, हिंदी तुलसी, कबीर, सूर और रसखान के लिए ब्रह्मा के कमंडल से बही धार है हिंदी।"

हिंदी का उत्कर्ष : राजभाषा के रुप में सम्मानित होने के बाद इसके और उत्थान, विकास एवं तरक्की के लिए विशेष प्रयास किया गया। हमारे देश की सरकारों ने केंद्र एवं राज्य के सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यक्रमों एवं कामकाजों में प्रोत्साहन में हिंदी पर विशेष ध्यान दिया। विशेष प्रयास के अनुरूप गैर हिंदी राज्यों में हिंदी में रुचि पैदा करने के लिए बहुत से कार्यक्रम चलाये गये और प्रोत्साहन के लिए बहुत पाठ्यक्रम एवं कार्य सूची बनायी गयी। प्रोत्साहन के लिए कुछ उपहार एवं धन राशि दी गयी।

सरकारी कर्मचारियों को जो गैर हिंदी भाषी प्रदेशों से हैं, उनको कुछ वेतनवृद्धि का लाभ भी दिया गया है। सरकारी कार्यालयों में वार्षिक स्तर पर अधिकाधिक हिंदी प्रयोग करने वाले कर्मचारियों को भी पारितोषिक दिया जाता है जिससे कि कर्मचारी अधिकाधिक मात्रा में अपने सरकारी कार्य, हिंदी भाषा के माध्यम से करें।

हिंदी के विकास के लिए आजादी के बाद बहुत सी हिंदी पुस्तकों को प्रकाशित करवाया गया। बहुत से अंग्रेजी पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद कराया गया। बच्चों में हिंदी में रोचकता जगाने के लिए बच्चों के अनुरूप बहुत से बच्चों की कहानियों एवं संबंधित पुस्तकों को प्रकाशित कराया गया। हिंदी के प्रचार प्रसार में हिंदी भाषा में बनी बहुत से कार्यक्रम टी.वी. चैनलों में प्रसारित होते हैं जिससे भी हिंदी को समझने में काफी सहायता मिलती है। हिंदी एक बहुत ही सरल भाषा है जो आसानी से सीखी जा सकती है। आज हमारे देश के अधिकतर देशवासियों को हिंदी बोलने और समझने में कोई कठिनाई नहीं होती है। वे उसका सहजता से प्रयोग कर रहे हैं। इसको कविता की कुछ पंक्तियों से हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने लिखा है -

''हिंदी तन-मन, हिंदी जीवन, रग-रग हिंदी में परिचय, देवों के द्वारा विरचित है, ऋषियों ने विस्तृत किया जिसे अपने मौलिक अनुशीलन से, कवियों ने अमृत किया जिसे, यशवंत शासकों ने दी थी, जिसको नूतन परिभाषा दें, वह भारत की अलबेली, जन-जन की हिंदी भाषा है। जिससे मैंने स्वप्न बुने, जिससे मेरी अभिलाषा है, जिससे मुझे पहचान मिली, वह मेरी हिंदी भाषा है।''

हिंदी भाषा के विकास के लिए हमारे पूर्व राजनेताओं ने जो स्वप्न देखा था उसके अनुरूप उसका विकास नहीं हो पाया है। राजनेताओं के प्रयास, समाजसेवियों के प्रयास, सरकारी अफसरों एवं कर्मचारियों के प्रयास के बावजूद कुछ कमी रह गयी है। हमारे राजनेताओं ने हिंदी को राष्ट्रभाषा तक पहुँचाने के लिए हिंदी की राजभाषा से शुरुआत की। इसे राष्ट्रभाषा तक पहुँचाने के लिए अभी अथक प्रयास करने होंगे।

हिंदी भाषा के प्रसार, प्रचार एवं उत्थान में आने वाली समस्याएँ : आजादी के 77 वर्ष बीत जाने के बाद भी हिंदी भाषा के उत्थान के लिए बहुत सी समस्याएँ हैं। अर्थात हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए आज़ादी के समय जो सोचा गया था वहाँ तक नहीं पहुँच पाए हैं। इसलिए उन समस्याओं की तरफ सभी का ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा। इस समस्या के निराकरण से ही हिंदी का विकास संभव है।

1) हिंदी में तकनीकी पुस्तकों का अभाव : हिंदी में तकनीकी पुस्तकों के अभाव में तकनीकी शिक्षा अंग्रेजी में दी जाती है। तकनीकी पुस्तकों का हिंदी रूपांतर न होने से अंग्रेजी में शिक्षा के लिए बाध्य हैं।

2) सरकारी कार्यों में हिंदी के प्रति झिझक : हमारे देश के कार्यालयों में सरकारी निदेश के बावजूद हिंदी में कार्य करने के प्रति झिझक है। सरकारी कर्मचारी हिंदी में सरकारी कार्य करने से परहेज करते हैं। हिंदी टाइपिंग, कंप्यूटरों में हिंदी टाइपिंग कठिन लगता है।

3) देश में अनेक भाषाओं का होना : हमारा देश विविधताओं का देश है। प्रत्येक राज्य के लोग अपने राज्य की भाषाओं पर अधिक ध्यान देते हैं और अपने सारे कार्य अपने राज्य की भाषा में करना चाहते हैं।

4) समाज में अंग्रेजी की अधिकता: हमारे देश में अँग्रेजी बोलने में लोग गर्व अनुभव करते हैं।

अँग्रेजी रियल लाइफ स्टेटस सिंबल बन गई है।

5) बच्चों को अँग्रेजी के लिए प्रोत्साहित करना : आज के अभिभावक अपने बच्चों को अंग्रेजी ही सिखाना चाहते हैं। उनके मन में इस बात ने जगह बना ली है कि अंग्रेजी से सबकुछ संभव है। बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भेजते हैं जिससे इन बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो सके। ये स्कूल अंग्रेजी पढ़ने पर जोर देते हैं।

6) दैनिक कार्यों में हिंदी की उपेक्षा: देश की जनता हिंदी समझती है फिर भी बोलचाल में अँग्रेजी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करती है, अँग्रेजी बोलने और लिखने में अपनी शान समझती है।

हिंदी के विकास में आने वाली समस्याओं का समाधान

हिंदी के विकास में आने वाली समस्याओं के समाधान में सार्थक प्रयास किये जा सकते हैं जो इस प्रकार हैं -

1) हिंदी माध्यम से स्कूली शिक्षा का प्रसार ।

2) अंग्रेजी माध्यमों के स्कूलों में भी हिंदी भाषा की पढ़ाई का अनिवार्य होना।

3) बच्चों से एवं आपस में हिंदी में अत्यधिक वार्तालाप करना।

4) सरकारी कार्यालयों में प्रत्येक कर्मचारी को हिंदी में कुछ कार्य करने की अनिवार्यता।

5) हिंदी में निरंतर संगोष्ठी, कार्यशालाओं एवं सम्मेलनों का आयोजन करना।

6) हिंदी नाटकों एवं चलचित्रों का आयोजन करना।

7) सामाजिक संदेशों का आदान-प्रदान हिंदी माध्यम से करना।

8) आमंत्रण, निमंत्रण पत्रादि हिंदी माध्यम में तैयार करना।

9) मातृभाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा सीखना अनिवार्य करना।

उपरोक्त के साथ-साथ हिंदी के प्रति रुचिकर बातें करना। हिंदी के कार्य को प्रोत्साहित करना। हिंदी में कार्य करने वालों को सम्मानित करना। हिंदी के सम्मान में ठाकुर जी की लिखी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं -

"करते हैं तन-मन से वंदन, जन गण मन की अभिलाषा का

अभिनंदन अपनी संस्कृति का, आराधना अपनी भाषा का"

किसी देश के विकास के लिए उसकी अपनी भाषा होनी चाहिए। हिंदी को अधिक से अधिक मान-सम्मान देकर एवं उसके प्रचार-प्रसार से उसे उन्नत और आगे बढ़ा सकते हैं और हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रयास करते हुए अंतत: इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकृत एवं स्थापित किया जाए जिससे देश और हिंदी भाषा दोनों की प्रगति और उन्नती होगी।

तितली

प्रियंका प्रियदर्शिनी बेहेरा
वरिष्ठ तकनीकी सहायक-बी

परी जैसी तितली लगती, फूल से प्यार करती।
फूल के शहर में वह रहती, फूल को वह खुद अपनाती।।
छोटे छोटे हैं पंख उसके, रंग बिरंगे पंखों से दुनिया जीती।
पत्ते की तरह उड़-उड़ जाती, प्यार से इस संसार में वह मिलजाती।।
छोटे बच्चे उसे प्यार करते, ताली बजाकर खुश होते।
संसार के लिए वह मंगलमयी, इस सृष्टि को सुंदर उसने बनायी।।

मेरी बेटी

कोई मांगी हुई मन्नत नहीं, नसीब वाला इश्क हो तुम,
जो किसी चीज से ना मिल सके, वो सुकून हो तुम,
ठण्ड पड़ी धूप सी, गर्मी की छाँव हो तुम,
जहाँ ठहर कर आये चैन मुझको, वो गाँव हो तुम,
जिसको हर पल दुआ में माँगू, वो इबादत हो तुम,
जो कभी न छूट सके, ऐसी आदत हो तुम
नहीं बता सकता लफ्जों में, मेरी इकलौती चाहत हो तुम,
भूल गयी, अभी तो बताई थी तुम्हें,
की कोई माँगी हुई मन्नत नहीं, नसीब वाला इश्क हो तुम ....

पेरिस ओलंपिक - 2024 में भारत

संजय सिंह पंवार
भंडार सहायक-ए

पेरिस ओलंपिक- 2024 का समापन हो गया है और भारत पदक तालिका में 71वें स्थान पर रहा, जबकि टोक्यो 2020 में यह 48वें स्थान पर था। एक रजत और पाँच काँस्य सहित छह पदक जीतने के बावजूद, देश को कई बार करीबी हार और निराशाजनक परिणामों का सामना करना पड़ा, जिससे भारतीय खेलों के भविष्य को लेकर चर्चा शुरू हो गयी है।

पेरिस ओलंपिक 2024 में भारत के प्रदर्शन की मुख्य विशेषताएँ

पेरिस ओलंपिक 2024 में भारतीय पदक विजेता		
भारतीय एथलीट	**पदक**	**स्पर्द्धा**
मनु भाकर	काँस्य	महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्द्धा
मनु भाकर और सरबजोत सिंह	काँस्य	10 मीटर एयर पिस्टल मिश्रित टीम स्पर्द्धा
स्वप्निल कुसाले	काँस्य	पुरुषों की 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन
भारतीय हॉकी टीम	काँस्य	पुरुष हॉकी
नीरज चोपड़ा	रजत	पुरुषों की भाला फेंक
अमन सेहरावत	काँस्य	कुश्ती, पुरुषों की 57 किग्रा फ्रीस्टाइल स्पर्द्धा

नीरज चोपड़ा ने भाला फेंक में 89.45 मीटर की दूरी तय करके रजत पदक जीता। यह उनका दूसरा ओलंपिक पदक था, जिससे वे भारत के पाँचवें दो बार ओलंपिक पदक विजेता बन गये।

- मनु भाकर ओलंपिक शूटिंग में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। वह व्यक्तिगत और मिश्रित टीम स्पर्द्धाओं में पदक जीतकर एक ही खेल में दो पदक जीतने वाली स्वतंत्र भारत की पहली एथलीट भी बनीं।
- भारत ने निशानेबाजी में तीन पदक जीते, जिसमें स्विप्निल कुसाले द्वारा हासिल किया गया 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन में पहला ओलंपिक पदक भी शामिल है। यह ओलंपिक में निशानेबाजी में भारत का सर्वोच्च पदक था।
- भारतीय एथलीटों ने तीरंदाजी, एथलेटिक्स, बैडमिंटन, मुक्केबाजी, घुड़सवारी, गोल्फ, हॉकी, जूडो, नौकायन, निशानेबाजी, तैराकी, टेबल टेनिस और टेनिस जैसे 16 खेलों में 69 पदकों के लिए प्रतिस्पर्द्धा की।
- लक्ष्य सेन ओलंपिक में पुरुष बैडमिंटन के सेमीफाइनल में पहुँचने वाले पहले भारतीय बने और चौथे स्थान पर रहे।
- पहलवान विनेश फोगाट महिलाओं के 50 किलोग्राम वर्ग के फाइनल में पहुँचने के बाद, 100 ग्राम अधिक वजन होने के कारण अयोग्य घोषित कर दी गयीं।
- आज तक भारत ने कुल 41 ओलंपिक पदक जीते हैं। उल्लेखनीय उपलब्धियों में नॉर्मन प्रिचर्ड के रजत पदक (1900 पेरिस), केडी जाधव का कांस्य (1952 हेलसिंकी), कर्णम मल्लेश्वरी का कांस्य (2000 सिडनी), अभिनव बिंद्रा का स्वर्ण (2008 बीजिंग) और नीरज चोपड़ा का स्वर्ण (2020 टोक्यो) शामिल हैं।
- पुरूष हॉकी टीम ने आठ स्वर्ण सहित 13 पदक जीते हैं, जबकि भारत ने कुश्ती में आठ पदक प्राप्त किये हैं। भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ ओलंपिक प्रदर्शन टोक्यो 2020 में रहा, जिसमें इसे एक स्वर्ण सहित सात पदक प्राप्त हुए है। भारत का दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन वर्ष 2012 के लंदन ओलंपिक में रहा था, जब इसने छह पदक (दो रजत और चार कांस्य) जीते थे।

भारत के लिये ओलंपिक पदक जीतने में इतना संघर्ष क्यों ?

- **प्रतिभा की पहचान:** भारत में, प्रतिभा की पहचान अक्सर तदर्थ आधार पर होती है, जिसकी पहुँच और प्रभावशीलता सीमित होती है।
- युवा एथलीटों की खोज और पहचान करने में प्रणालीगत समस्याएँ हैं, खासकर दूरदराज़ के क्षेत्रों में।
- **बुनियादी ढाँचा और संसाधन:** भारत के कई क्षेत्रों में एथलीटों को प्रभावी ढंग से प्रशिक्षित करने के लिये आवश्यक बुनियादी ढाँचे और संसाधनों की कमी है।
- प्रशिक्षण सुविधाओं, कोचिंग विशेषज्ञता और वित्तीय सहायता तक सीमित पहुँच संभावित प्रतिभाओं के विकास में बाधा बन सकती है।
- कई एथलीट सरकार से अपर्याप्त वित्तीय सहायता के कारण संघर्ष करते हैं। उदाहरण के लिये, भारत के शीर्ष शीतकालीन ओलंपियन शिवा केशवन को अपने प्रशिक्षण और भागीदारी के लिए क्राउडफंडिंग का सहारा लेना पड़ा।
- भारत में अरबपतियों और निजी संपत्ति की बढ़ती संख्या के बावजूद, क्रिकेट के अलावा अन्य खेलों में प्रायोजन एवं निवेश में अभी भी एक महत्त्वपूर्ण अंतर है।

❖ **क्रिकेट का प्रभुत्व:** भारत में क्रिकेट की अत्यधिक लोकप्रियता ने खेल परिदृश्य में असंतुलन उत्पन्न कर दिया है, जिसमें 87% खेल पूंजी क्रिकेट को आवंटित की गयी है और अन्य सभी खेलों के लिए केवल 13%। इस असंगत आवंटन ने ओलंपिक खेलों के विकास में बाधा उत्पन्न की है।

- क्रिकेट के अलावा एक मज़बूत खेल संस्कृति और मीडिया प्रचार की कमी एक बाधा रही है। ओलंपिक खेलों को पर्याप्त रूप से समर्थन देने और भारत में अधिक समावेशी और प्रतिस्पर्धी खेल संस्कृति बनाने के लिये खेल निवेश और प्रचार हेतु अधिक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है।

❖ **अपर्याप्त खेल नीतियाँ:** भारत की खेल नीतियाँ ऐतिहासिक रूप से खंडित और कम वित्तपोषित रही हैं।

- खेल के बुनियादी ढाँचे में सुधार और एथलीटों का समर्थन करने हेतु टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम जैसे प्रयास किये गये हैं। हालाँकि, ये पहल अपेक्षाकृत हाल ही की हैं और अभी तक महत्त्वपूर्ण परिणाम नहीं दे पायी हैं।

❖ **दीर्घकालिक विकास:** भारत के खेल कार्यक्रम अक्सर एथलीट के दीर्घकालिक विकास के बजाए अल्पकालिक सफलताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

- विश्व स्तरीय एथलीट तैयार करने हेतु कई वर्षों तक निरंतर निवेश और योजना की आवश्यकता होती है।
- उदाहरण: सफल ओलंपिक देशों के पास दीर्घकालिक विकास योजनाएँ हैं जिनमें युवा प्रतिभाओं की खोज करना, उन्हें शुरुआती प्रशिक्षण प्रदान करना और उनके कॅरियर के दौरान उनका समर्थन करना शामिल है।

❖ **खेल संस्कृति का अभाव:** भारत में खेलों की तुलना में शिक्षा को सामाजिक प्राथमिकता दी जाती है। परिवार प्रायः चिकित्सा या लेखा जैसे क्षेत्रों में कॅरियर को प्राथमिकता देते हैं क्योंकि वे खेल को वित्तीय सुरक्षा हेतु कम व्यवहार्य मानते हैं।

- जाति और क्षेत्रीय पहचान से मज़बूत संबंधों के साथ भारत का जटिल सामाजिक स्तरीकरण एकीकृत खेल संस्कृति के विकास में बाधा डालता है। कई समुदाय पारंपरिक भूमिकाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए अभिजात वर्ग के स्तर पर खेलों को आगे बढ़ाने को हतोत्साहित करते हैं।

भारत अपने ओलंपिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए क्या कर सकता है?

❖ ज़मीनी स्तर पर विकास: ज़मीनी स्तर पर खेलों के विकास पर अधिक ज़ोर दिया जाना चाहिए। विभिन्न खेल-विधाओं में कम उम्र से ही प्रतिभा की पहचान करना और उसका पोषण करना एक मज़बूत आधार बनाने में सहायता कर सकता है।

❖ बुनियादी अवसंरचना में निवेश: विश्व स्तरीय प्रशिक्षण सुविधाओं का निर्माण और एथलीटों को सर्वोत्तम कोचिंग व सहायता प्रणाली तक पहुँच प्रदान करना महत्त्वपूर्ण है। इसमें मनोवैज्ञानिक सहायता, पोषण और चोट प्रबंधन शामिल हैं।

- जमैका और ग्रेनेडा जैसे छोटे देश, जिनकी आबादी बहुत कम है, ओलंपिक में नियमित रूप से भारत से बेहतर प्रदर्शन करते हैं। स्प्रिंटिंग जैसे विशिष्ट खेलों में उनका केंद्रित निवेश लक्षित विकास के महत्त्व को दर्शाता है।

❖ **एथलीटों को सशक्त बनाना:** एथलीट खेलों में प्राथमिक हितधारक हैं तथा निर्णय लेने में उनकी भागीदारी खेल संगठनों में बहुत जरूरी जवाबदेही और पारदर्शिता ला सकती है।

❖ **महाविद्यालय खेल तंत्र:** भारत एक महाविद्यालय/कॉलेजिएट खेल तंत्र विकसित कर सकता है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में नेशनल कॉलेजिएट एथलेटिक्स एसोसिएशन (NCAA) को प्रतिबिंबित करता है।

- एनसीएए (NCAA) ने न केवल अमेरिका के लिये बल्कि पूरे विश्व के देशों के लिये बड़ी संख्या में ओलंपिक चैंपियन तैयार किये हैं। अगर एनसीएए कोई देश होता तो वह पेरिस ओलंपिक 2024 में 60 स्वर्ण पदकों के साथ पदक तालिका में शीर्ष पर होता।
- छोटे और बड़े देशों के कई एथलीट अपनी ओलंपिक सफलता का श्रेय एनसीएए में प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धा को देते हैं, जिससे अमेरिकी कॉलेज खेल प्रणाली वैश्विक खेलों में एक प्रमुख खिलाड़ी बन गई है।
- भारत के महाविद्यालय खेल तंत्र को छात्रवृत्ति और शैक्षणिक सहायता प्रदान करके शैक्षणिक एवं एथलेटिक्स के बीच संतुलन बनाना चाहिए, ताकि प्रतिभाशाली एथलीटों को आकर्षित किया जा सके, अन्यथा वे खेल से बाहर हो सकते हैं।
- विभिन्न खेलों में नियमित अंतर-महाविद्यालय और अंतर-विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं को बढ़ावा देने से युवा एथलीटों को उच्च दबाव वाली स्थितियों का अधिक अनुभव प्राप्त होगा, जिससे वे ओलंपिक जैसी अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिये तैयार हो सकेंगे।
- चीन, जो भारत के साथ कुछ सामाजिक-आर्थिक समानताएँ साझा करता है, ने कम उम्र से ही प्रतिभाओं की व्यवस्थित पहचान करके और उन्हें बढ़ावा देकर उत्कृष्टता हासिल की है।
- खेलों में सरकार के उद्देश्यपूर्ण और निरंतर निवेश के परिणामस्वरूप ओलंपिक में पदक प्राप्त हुए हैं।

❖ **सांस्कृतिक बदलाव:** खेलों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव आवश्यक है। परिवारों को बच्चों को खेल में कॅरियर बनाने में सहायता करने के लिये प्रोत्साहित करना और शिक्षा प्रणाली में खेलों को शामिल करना मददगार हो सकता है।

❖ **सरकारी सहायता में वृद्धि:** सरकार को ओलंपिक खेलों के लिये अधिक सुसंगत और पर्याप्त निधि प्रदान करनी चाहिए। इसमें एथलीटों को प्रत्यक्ष सहायता के साथ-साथ प्रशिक्षण और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन में निवेश शामिल है।

❖ **विकास पर ध्यान केंद्रित करना:** भारत को लॉस एंजिल्स ओलंपिक- 2028 के लिये अपने एथलीटों की संख्या को 117 से बढ़ाकर तीन गुना करने का लक्ष्य रखना चाहिये ताकि अमेरिका और जापान, जिनके पास क्रमशः 600 और 400 से अधिक एथलीट हैं, के साथ बेहतर प्रतिस्पर्द्धा की जा सके।

- इस वृद्धि से स्वाभाविक रूप से अधिक पदक मिलेंगे। भारत को केवल वर्ष 2036 में होने वाले खेलों की मेज़बानी पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, लॉस एंजिल्स (ग्रीष्मकालीन) ओलंपिक- 2028 और उसके बाद के पदकों की संख्या में सुधार करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए ताकि भारत को ओलंपिक खेल राष्ट्र के रूप में स्थापित किया जा सके। पेरिस ओलंपिक गंभीर अंतर्निरीक्षण/अंतर्दर्शन और अधिगम का एक अवसर है

भारत में खेल विकास से संबंधित पहल क्या हैं?

- खेलो इंडिया
- राष्ट्रीय खेल विकास कोष (एनएसडीएफ)

❖ **भारतीय खेल प्राधिकरण (एसएआई):** इसकी स्थापना वर्ष 1984 में खेलों को बढ़ावा देने के लिये सोसायटी अधिनियम, 1860 के तहत पंजीकृत सोसायटी के रूप में की गई थी।

❖ **राष्ट्रीय खेल पुरस्कार:** राजीव गांधी खेल रत्न, अर्जुन पुरस्कार, ध्यानचंद पुरस्कार और द्रोणाचार्य पुरस्कार।

- ये पुरस्कार भारत में सर्वोच्च खेल सम्मान हैं, जो भारतीय एथलीट के उत्कृष्ट प्रदर्शन को दर्शाते हैं और भावी पीढ़ियों को प्रेरित करते हैं।

- **दिव्यांग जनों के लिये खेल और खेल योजना:** वर्ष 2009-10 में एक केंद्रीय क्षेत्र योजना के रूप में शुरू किया गया, यह कार्यक्रम दिव्यांग एथलीटों को विशेष प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करता है, खेलों में उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करता है तथा उनके कौशल को बढ़ाता है।
- फिट इंडिया मूवमेंट

राजीव गांधी खेल अभियान: वर्ष 2014 में शुरू किये गए इस संघीय वित्त पोषित कार्यक्रम का उद्देश्य ब्लॉक स्तर पर खेल परिसरों का निर्माण करना है, जो इनडोर व आउटडोर दोनों खेलों के लिये अवसंरचना प्रदान करते हैं।

सफलता उन्हें मिलती है,
जो निडर होकर फैसला लेते हैं
और परिणामों से नहीं घबराते।
- पंडित नेहरू

उम्र चालिस की

निशांत मनिष
तकनीशियन-बी

ये उम्र चालीस की बड़ी अजीब होती है।
न बीस का जोश, न साठ की समझ,
ये हर तरह से गरीब होती है।
ये उम्र चालीस की बड़ी अजीब होती है।
सफेदी बालों से झाँकने लगती है,
तेज दौड़े तो साँस हाँफने लगती है,
टूटे ख्वाब, अधूरी ख्वाहिशें,
सब मुँह तुम्हारा ताकने लगते हैं,
खुशी इस बात की होती है,
कि ये उम्र प्राय: सबको नसीब होती है।
ये उम्र 40 की बड़ी अजीब होती है।
न हसीना मुस्कुरा के देखती है,
न ही नजरों के तीर फेंकती है,
और नैन लड़ भी जाये नसीब से,
तो ये उम्र तुम्हे दायरे में रखती है।

कदर नहीं थी जिसकी जवानी में,
वो पत्नी अब बड़ी करीब होती है,
ये उम्र चालीस की बड़ी अजीब होती है।
वैसे नज़रिया बदले तो,
शुरू से शुरुआत हो सकती है,
आधी तो गुजर गयी,
आधी बेहतर गुजर सकती है।
थोड़ा बालों को काला,
और थोड़ा दिल को हरा कर लो ,
कुछ अधूरी ख्वाहिशों से समझौता कर लो।
जिंदगी तो चलेगी अपनी रफ्तार से ही,
तुम बस अपनी रफ्तार काबू कर लो।
फिर देखो ये कितनी खुशनशीब होती है,
ये उम्र चालीस की बड़ी अजीब होती है।

अनुभव ही आपका सर्वोत्तम शिक्षण है। जब तक जीवन है सीखते रहो।
- स्वामी विवेकानंद

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

प्रियदर्शी सिंह
तकनीकी अधिकारी-ए

इस संसार में सर्वशक्तिमान प्रभु ने हमें असीम बुद्धिमत्ता, दार्शनिकता और चेतना प्रदान की हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि मानव इतिहास में विभिन्न वैज्ञानिक खोजों व तकनीकी विकास ने मानव जीवन के सभी पहलुओं पर अपनी छाप छोड़ी है। आग की खोज, पत्थर के औजार, पहिये का अविष्कार, भाप इंजन आदि के अविष्कार के दौर से हम काफी आगे आ चुके हैं |

आज का दौर कृत्रिम बुद्धिमत्ता युक्त यंत्रों का दौर हैं जिसके हम प्रत्यक्ष रूप से साक्षी हैं। जो कार्य कभी मानव के द्वारा हुआ करते थे वे ज़्यादातर कार्य हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता युक्त यंत्रों का प्रयोग कर कम समय में अधिक दक्ष तरीके से कर सकते हैं।

मानव हस्तक्षेप के बिना बहुत सारे काम आसानी से किये जा रहे हैं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता युक्त यंत्रों के द्वारा किये गये कार्य लगभग मनुष्य द्वारा किये गये कार्य के समान हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सूचनाओं का संग्रह है, इन सूचनाओं का विश्लेषण कर आगे की योजनाओं को मूर्त रूप दिया जाता है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता युक्त यंत्र मानव हस्तक्षेप के बिना एक प्रभावशाली निर्णय लेने में सहायक हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रस्तावक यह दावा करते हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता युक्त यंत्र हमारे जीवन में शामिल हो जाएँगे, तो उद्योगों के लिए बड़े पैमाने पर इनका प्रयोग होगा, नये दौर के कृत्रिम बुद्धिमत्ता युक्त मशीन उत्तम डिज़ाइन, उत्तम उत्पादन तकनीक विभिन्न प्रकार के उत्पाद हमारी ज़रूरतों के अनुरूप बनाने में सक्षम हैं|

स्वास्थ्य के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग अत्यंत ही प्रशंसनीय है, कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे जीवन को और भी आरामदायक बनाने में सक्षम है, वहीं दूसरी ओर कुछ लोगों का यह मानना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मनुष्य की आवश्यकताओं को प्रतिस्थापित कर देगा |

लेकिन इनमें बहुत चिंता की बात नहीं है, आज भी मानव चेतना की बहुत सारी बातें हैं जो अनसुलझी है, मानव मस्तिष्क बहुत जटिल है, इन्हें छोटी-छोटी इकाइयों में तोड़ना सरल नहीं हैं। अंतर्ज्ञान को तर्क के रूप में प्रस्तुत करना आसान नहीं है कल्पना को मूर्त रूप देना सरल नहीं है, संपूर्णता केवल छोटी-छोटी इकाइयों का योगफल भर नहीं है बल्कि यह योगफल से कहीं आगे है।

मानव कभी भी किसी भी प्रकार के तकनीकी विकास से आगे रहा है और कृत्रिम बुद्धिमत्ता अछूती नहीं हैं, आने वाले समय में मानव की जिम्मेदारियों का निर्वहन कृत्रिम बुद्धिमत्ता के द्वारा संभव हो पाएगा और इस प्रकार हमारे पास ज़्यादा समय होगा और हम अंतर्ज्ञान की ओर बढ़ेंगे व आत्मज्ञान, आत्मानुभूति तथा आध्यात्मिकता की ओर ज़्यादा समय दे पाएँगे तथा हम असीम संभावनाओ की ओर अग्रसर होंगे।

समाचार पत्रों की भूमिका

अभिषेक खरे
तकनीशियन-ए

ज्ञान बढ़ाने में समाचार पत्र की भूमिका

समाचार पत्र एक प्रकाशन है जो पाठकों को दुनिया भर में होने वाली सभी नवीनतम समाचारों और घटनाओं से अवगत कराता है। समाचार पत्र 17वीं शताब्दी में अपनी स्थापना के बाद से विकसित होकर हमारे रोजमर्रा के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है।

समाचार-पत्र की भूमिका

छात्रों के लिए, प्रतिदिन समाचार पत्र पढ़ना वास्तव में महत्वपूर्ण है। इसके परिणामस्वरूप छात्रों में मजबूत सामान्य ज्ञान और आलोचनात्मक समझ विकसित होती है। इससे उनकी शब्दावली का विस्तार होता है। छात्रों को हमारे देश में होने वाली घटनाओं के बारे में सूचित किया जाना चाहिए क्योंकि वे देश का भविष्य हैं। वे विभिन्न समसामयिक घटनाओं के विषयों को कवर करते हैं, सिविल सेवा, एसएससी और आईएएस परीक्षाओं जैसी प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं को इस सार से लाभ होगा।

दैनिक जीवन में समाचार पत्र का उपयोग

समाचार पत्रों ने निम्नलिखित तरीकों से समाज में सुधार किया है:

- यह समसामयिक घटनाओं के बारे में लोगों की जागरूकता बढ़ाने में सहायता करता है।
- समाचार पत्र पाठकों को वह सभी जानकारी देते हैं जिनकी उन्हें आवश्यकता होती है।
- यह सरकार और जनता के बीच सबसे अच्छा संबंध है जिसे आप खोज सकते हैं।
- समाचार पत्र सामाजिक सरोकारों, संस्कृतियों और कलाओं सहित विभिन्न विषयों पर कहानियाँ भी प्रकाशित करते हैं।
- यह लोगों को महत्वपूर्ण विषयों पर आम सहमति के बारे में सूचित करता है।
- यह प्रशासन और मंत्रियों के आलोचनात्मक मूल्यांकन में सहायता करता है।
- समाचार पत्र पढ़कर हम जागरूक नागरिक बन सकते हैं।
- हम प्रौद्योगिकी, सरकारी नियमों, अकादमिक अनुसंधान और अन्य चीजों में नये विकास के साथ जुड़े रहते हैं।

- समाचार पत्र पाठकों को उत्कृष्ट कैरियर संभावनाएं प्रदान करते हैं।

समाचार पत्र हमारे जीवन का अभिन्न अंग कैसे बन गए हैं?

1. उन्हें अच्छा बोलने में सक्षम बनाता है

समाचार पत्रों के उपयोग से छात्र विभिन्न विषयों के बारे में सीख सकते हैं। वे अपने वक्तृत्व कौशल का विकास करते हैं, जिससे उनके लिए भाषणों, बहसों और बातचीत में सक्रिय रूप से भाग लेना आसान हो जाता है। जब कोई छात्र विभिन्न विषयों का जानकार होता है, तो वह आत्मविश्वास से लोगों के सामने बात कर सकता है। अंततः, इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ता है।

दैनिक समाचार पत्र पढ़ना एक आश्चर्यजनक रूप से स्वस्थ अभ्यास है जो बहुत अधिक शैक्षिक मूल्य प्रदान करता है। इसमें वैश्विक घटनाओं के साथ-साथ देश, शहर और आसपास के स्थानों में क्या हो रहा है, इसकी प्रचुर जानकारी शामिल है। वास्तव में, समाचार पत्र सभी प्रासंगिक जानकारी के लिए हमारे प्राथमिक स्रोत के रूप में कार्य करता है।

2. खेल और मनोरंजन के बारे में समाचार प्रदान करता है

विभिन्न एथलेटिक स्पर्धाओं का आयोजन कभी-कभी घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है। कोई भी खिलाड़ी सूची, वर्तमान में चल रहे खेल, पदकों की संख्या, खिलाड़ी रैंकिंग, किसने कौन सा पदक जीता, विजेताओं और प्रतियोगियों आदि के बारे में सभी विवरण प्राप्त कर सकता है। समाचार पत्र व्यापार, व्यवसाय, मनोरंजन और एक राष्ट्र की आर्थिक स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान कर सकते हैं।

3. लिखने और पढ़ने की क्षमता में सुधार होता है

दैनिक समाचार पत्र पढ़ने से न केवल विद्यार्थियों की समझ बढ़ती है बल्कि उनकी शब्दावली में भी सुधार होता है। इसके अतिरिक्त, वे लेखों की भाषा और रिपोर्टिंग शैली में दक्षता हासिल करते हैं। विशेष रूप से, संपादकीय पृष्ठ और मुख पृष्ठ लेखों को उनकी गुणवत्ता, शैली और पर्याप्त सामग्री के कारण प्रोत्साहित किया जाता है।

इससे समय के साथ बेहतर वक्तृत्व, लेखन और पढ़ने के कौशल का परिणाम मिलता है। छात्र अपनी परीक्षाओं के साथ-साथ सामान्य रूप से जीवन का सामना करने के लिए खुद को उच्चतम आत्मविश्वास से सुसज्जित पाते हैं और उनके सामान्य संचार कौशल में भी सुधार होता है।

4. परियोजनाओं और अध्ययन के लिए उपयोगी सुझाव

छात्रों को बहुत अधिक शोध करना चाहिए और हाई स्कूल और कॉलेज दोनों में अपने शैक्षणिक कार्यों से निपटना चाहिए। और ऐसा करने के लिए, उन्हें अन्य अवधारणाओं, नवाचारों और बेहतर डिज़ाइनों की तलाश करनी होगी। विभिन्न विषयों को खोजने के लिए समाचार पत्र एक उपयोगी संसाधन है क्योंकि यह अक्सर हाल की खोजों पर चर्चा करता है। समाचार पत्र विचारों के अलावा कई खोजों, पदार्पणों और प्रतिष्ठानों पर समाचार प्रदान करते हैं।

5. सामाजिक जागरूकता बढ़ाता है

समाचार पत्रों के बिना, युवा पीढ़ी को कभी भी वैश्विक सामाजिक चिंताओं से अवगत नहीं कराया जा सकता है जो दुनिया भर में समुदायों या व्यक्तियों को प्रभावित कर रहे हैं। समाचार पत्र पाठकों को इन समस्याओं के बारे में उचित जानकारी देते हैं, जिससे विद्यार्थियों को उनके बारे में और अधिक जानने के लिए प्रेरणा मिलती है।

निष्कर्ष - समाचार पत्र लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। दैनिक समाचार पत्र पढ़ने से हमारी पढ़ने की आदतें बेहतर हो सकती हैं और हमारा प्रवाह बढ़ सकता है। यह व्यक्तियों को उनके दिमाग को विकसित करने में मदद करने के लिए सुडोकू, पहेलियाँ और अन्य मानसिक-व्यायाम गतिविधियाँ भी प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, अपना मनोरंजन करने के लिए, हम कॉमिक पुस्तकें और कार्टून ब्राउज़ कर सकते हैं।

समाचार पत्र पढ़ने के अनेक लाभों के कारण, छात्रों को ऐसा करने के लिए प्रत्येक दिन कुछ समय अवश्य निकालना चाहिए। बच्चों को भविष्य के लिए बेहतर ढंग से तैयार करने के लिए, माता-पिता और प्रशिक्षकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे कम उम्र से ही उनमें यह आदत डालें।

मातृभूमि

जगबीर
तकनीकी अधिकारी-ए

ऊँचा खड़ा हिमालय
आकाश चूमता है,
नीचे चरण तले झुक,
नित सिंधु झूमता है।

गंगा यमुना त्रिवेणी
नदियाँ लहर रही हैं,
जगमग छटा निराली,
पग - पग छहर रही हैं।

वह पुण्य भूमि मेरी,
वह स्वर्ण-भूमि मेरी।
वह जन्मभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी।

झरने अनेक झरते
जिसकी पहाड़ियों में,
चिड़िया चहक रही हैं,
हो मस्त झाड़ियों में।

अमराइयाँ घनी हैं
कोयल पुकारती है,

बहती मलय पवन है,
तन-मन सँवारती है।

वह धर्मभूमि मेरी,
वह कर्मभूमि मेरी।
वह जन्मभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी।

जन्मे जहाँ थे रघुपति,
जन्मी जहाँ थी सीता,
श्रीकृष्ण ने सुनायी,
वंशी पुनीत गीता।

गौतम ने जन्म लेकर,
जिसका सुयश बढ़ाया,
जग को दया सिखायी,
जग को दिया दिखाया।

वह युद्ध-भूमि मेरी,
वह बुद्ध-भूमि मेरी।
वह मातृभूमि मेरी,
वह जन्मभूमि मेरी।

ये संसार एक समंदर जैसा
जितने गोते उतने मोती।
नजर बस पारस सी चाहिए,
जो लोहे को भी स्वर्ण कर देती।
नहीं तो क्या पीतल और क्या सोना
दोनों का तो रंग एक सा सलोना।
गर जो तुम्हे मोती है पाना,
फिर तो पड़ेगा गोता लगाना।

- चाणक्य

भारत के दस सर्वोत्तम मंदिर

डॉ. जितेन दास
वैज्ञानिक-एफ

जगन्नाथ मंदिर

भारत के पूर्वी तट पर पुरी, ओडिशा में स्थित, जगन्नाथ मंदिर भगवान जगन्नाथ का एक पवित्र निवास है। मंदिर का विशाल शिखर और वार्षिक रथ यात्रा, जहाँ भगवान को विस्तृत रूप से सजाये गये रथों पर सड़कों पर घुमाया जाता है, दुनिया भर से भक्तों और पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इस भव्य उत्सव के दौरान लयबद्ध मंत्रोच्चार और उत्सव के उत्साह में डूब जाएँ।

बद्रीनाथ मंदिर

उत्तराखंड में गढ़वाल हिमालय की प्राकृतिक सुंदरता के बीच स्थित, बद्रीनाथ मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है। बर्फ से ढकी चोटियों और हरी-भरी घाटियों से घिरे, मंदिर का शांत वातावरण और वास्तुशिल्प सुंदरता भक्तों और प्रकृति प्रेमियों को समान रूप से आकर्षित करती है। इस पवित्र निवास पर आशीर्वाद लें और खुद को आध्यात्मिकता की दिव्य आभा में डुबो दें।

राम मंदिर

भगवान राम को समर्पित, अयोध्या में राम मंदिर का हिंदू पौराणिक कथाओं में गहरा महत्व है। इसका निर्माण लाखों श्रद्धालुओं के लिए आस्था और एकता का प्रतीक रहा है। भव्य मंदिर परिसर, अपनी भव्य वास्तुकला और शांत वातावरण के साथ, भगवान राम के अनुयायियों की भक्ति का प्रमाण है। जब आप महाकाव्य रामायण के दृश्यों को चित्रित करने वाली जटिल नक्काशी से सजे गलियारों से गुजरते हैं, तो आप अपनी आत्मा में शांति का अहसास महसूस कर सकते हैं।

बृहदेश्वर मंदिर

तमिलनाडु के तंजावुर में बृहदेश्वर मंदिर चोल राजवंश के दौरान निर्मित एक उत्कृष्ट वास्तुशिल्प कृति है। भगवान शिव को समर्पित, मंदिर का विशाल विमान (मंदिर टॉवर) चोल की वास्तुकला कौशल के प्रमाण के

रूप में खड़ा है। विशाल नंदी प्रतिमा, जटिल भित्तिचित्र और इस प्राचीन मंदिर के चारों ओर के रहस्यमय वातावरण को देखकर आश्चर्यचकित रह जाएँगे।

केदारनाथ मंदिर

उत्तराखंड में हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों के बीच स्थित, केदारनाथ मंदिर भगवान शिव को समर्पित सबसे पवित्र मंदिरों में से एक है। 3,583 मीटर की ऊंचाई पर स्थित, मंदिर तक पहुंचने के लिए लुभावने परिदृश्यों और शांत घाटियों से होकर गुजरना पड़ता है। राजसी पहाड़ों के बीच आध्यात्मिक माहौल और भगवान शिव की दिव्य उपस्थिति एक अलौकिक अनुभव प्रदान करती है।

सोमनाथ मंदिर

गुजरात में अरब सागर के तट पर स्थित, सोमनाथ मंदिर भगवान शिव को समर्पित बारह ज्योतिर्लिंग मंदिरों में से एक के रूप में अत्यधिक महत्व रखता है। कई आक्रमणों और पुनर्निर्माणों का सामना करने के बावजूद, मंदिर लचीलेपन और विश्वास के प्रतीक के रूप में खड़ा है। समुद्र के किनारे भव्य आरती समारोह के साक्षी बनें, और लयबद्ध मंत्रोच्चार और टकराती लहरों के बीच आध्यात्मिक तरंगों का आनंद लिया जा सकता है।

मीनाक्षी मंदिर

तमिलनाडु के मदुरै में मीनाक्षी मंदिर में द्रविड़ वास्तुकला की आकर्षक दुनिया में कदम रखें। देवी मीनाक्षी को समर्पित, मंदिर परिसर जीवंत मूर्तियों और विशाल गोपुरम (प्रवेश द्वार टॉवर) से सुसज्जित एक उत्कृष्ट कृति है। जटिल गलियारों का अन्वेषण करें, शाम की आरती (प्रार्थना समारोह) में भाग लें और भगवान शिव और देवी पार्वती के दिव्य विवाह का जश्न मनाने वाले जीवंत मीनाक्षी थिरुकल्याणम उत्सव को देखें।

वैष्णो देवी मंदिर

जम्मू और कश्मीर में सुरम्य त्रिकुटा पर्वत के बीच स्थित, वैष्णो देवी मंदिर लाखों लोगों द्वारा पूजनीय एक तीर्थ स्थल है। देवी महालक्ष्मी के स्वरूप माता वैष्णो देवी से आशीर्वाद लेने के लिए ऊबड़-खाबड़ इलाके से ट्रैकिंग यात्रा पर निकलें। रास्ते में आध्यात्मिक आभा और मनमोहक दृश्य तीर्थयात्रा को एक आत्मविभोर करने वाला अनुभव बनाते हैं।

कोणार्क सूर्य मंदिर

प्राचीन वास्तुकला का चमत्कार, ओडिशा में कोणार्क सूर्य मंदिर एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है जो अपनी पत्थर की जटिल नक्काशी और संरचनात्मक भव्यता के लिए प्रसिद्ध है। भगवान सूर्य को समर्पित, मंदिर के रथ के आकार का डिज़ाइन और विशाल मूर्तियां दिव्य प्राणियों, पौराणिक प्राणियों और जटिल रूपांकनों को दर्शाती हैं। मंदिर परिसर का अन्वेषण करें और सूर्योदय और सूर्यास्त के दौरान प्रकाश और छाया का जादुई खेल देखें।

स्वर्ण मंदिर

पंजाब के अमृतसर के मध्य में स्थित, स्वर्ण मंदिर, जिसे श्री हरमंदिर साहिब के नाम से भी जाना जाता है, आध्यात्मिक लचीलेपन और एकता का प्रतीक है। चमचमाते सोने से सुसज्जित, मंदिर का शांत वातावरण और पवित्र तालाब, जिसे अमृत सरोवर के नाम से जाना जाता है, शांति की आभा पैदा करते हैं। मंत्रमुग्ध कर देने वाले पालकी साहिब समारोह को देखना और सामुदायिक रसोई का आनंद लेना, मुफ्त भोजन (लंगर) परोसना, ऐसे अनुभव हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता।

छत्रपति शिवाजी

अनिल रोहिदास बुर्डे
तकनीशियन-बी

आज हम बात करने वाले है एक ऐसे राजा की, जिनका शासन काल भारतवर्ष में अभीतक का सबसे अच्छा शासन काल माना गया। उनका शासन काल जितना बेहतरीन था उससे भी ज्यादा वो एक महान राजा और रणनीतिकार थे जिन्होने मराठा साम्राज्य की नींव रखी। जी हाँ हम बात कर रहे हैं मराठा शासन के महान राजा छत्रपति शिवाजी महाराज की।

छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म महाराष्ट्र राज्य के पुणे जिले में स्थित शिवनेरी किले पर 19 फरवरी 1630 को हुआ। किले पर स्थित शिवाई देवी के नाम से उनका नाम शिवाजी रखा गया। उनके पिता शाहजी राजे भोसले मराठा सेनापती थे और वो दक्कन सल्तनत में काम करते थे। शाहजी राजे काम के सिलसिले मे ज़्यादातर बाहर रहा करते थे और उनकी दूसरी रानी का लड़का संभाजी भी उनके साथ ही रहता था। छत्रपति शिवाजी महाराज को हिंदवी स्वराज्य की स्थापना करने की प्रेरणा उनको अपनी माताजी जीजाबाई से मिली। माता जीजाबाई उनको बचपन मे महाभारत और रामायण की जंग की कहानियां सुनाती थीं। इन सबका असर राजा शिवाजी के ऊपर था। माता जीजाबाई ने ही राजा शिवाजी को घुड़सवारी, तलवारबाजी, तीरंदाजी, शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण दिया। एक आदर्श शासनकर्ता, उत्कृष्ट योद्धा एवं सहिष्णु राजा के तौर पर उन्होंने पूरे महाराष्ट्र के साथ साथ देश में भी अपना स्थान बनाया।

- **बचपन**

उम्र के 10 वें साल में ही छत्रपति शिवाजी महाराज की शादी निबांलकर घराने के सई बाई से पुणे के लाल महल मे हुई। सई बाई रानी साहेब शिवाजी महाराज की प्रमुख रानी थी और अपने साम्राज्य को बढ़ाने के

लिए उन्होंने और 7 शादियाँ की थीं। वैवाहिक राजनीति के ज़रीए उन्होंने सभी मराठा सरदारों को एक छत्र के नीचे लाकर अपने साथ काम करने की सफल राजनीति की। इसी समय में दक्कन में बीजापुर, अहमनदगर और गोलकुंडा ये तीन इस्लामिक सत्ता राज कर रही थीं। इनमें से अहमदनगर के निजामशाह और बीजापुर के आदिलशाह के दरबार में शिवाजी महाराज के पिताजी शाहजी राजे काम कर चुके थे। लेकिन शिवाजी महाराज की माताजी जीजाबाई अपने पुत्र को नई सल्तनत बनाने की प्रेरणा देती थीं।

- **स्वराज्य की स्थापना** :

छत्रपति शिवाजी महाराज को हिंदवी स्वराज्य स्थापित करने के लिये माता जीजाबाई हमेशा प्रेरणा देती रहीं। काफी छोटी उम्र में शिवाजी महाराज ने पुणे से नज़दीक खाली पहाड़, पुराने किले धीरे- धीरे करके अपने कब्जे में लिये। अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर आसपास की जगह की जानकारी हासिल की। उसी समय उनसे बहुत सारे लोग जुड़ने लगे जिन्होंने आगे चलकर अपने असाधारण युद्ध कौशल से महाराज के प्रति अपनी ईमानदारी साबित की और स्वराज्य को खड़ा करने में अपना योगदान दिया। इसमें मुख्य रुप से कहा जाये तो कान्होजी जेधे, नेताजी पालकर, तानाजी मालुसरे, येसाजी कंक, बाजीप्रभु देशपांडे, बाजी पासलकर, हंबीरराव मोहिते, मालोजी घोरपदे, बहिर्जी नाइक जैसे 18 पगड़ जाति और 12 मावल के लोग शामिल थे।

भोर तालुका मे स्थित रायरेश्वर नामक दुर्ग पर अपने 12 मावल के साथियों के साथ स्वराज्य स्थापित करने की शपथ ली, तब उनकी उम्र महज 15 से 16 साल की होगी। माँ जीजाबाई के साथ शिवाजी महाराज अब पूना में रहने के लिये आये थे। तब पूना की हालत बहुत खराब थी और लोग भी आस-पास रहने से डर रहे थे, तब छोटे से शिवाजी महाराज ने पूना के जमीन पर सोने का मुलामा चढ़ाये हुए हल से खेती की शुरुआत की, तब जाकर आस-पास के गाँव वाले पूना आकर बसने लगे। अपनी उम्र के 16 वें साल में उन्होंने बीजापुर दरबार में मचे कलह के बीच में पूना से नजदीक तोरणा किले पर चढ़ाई कर उस किले को हासिल किया। उस वक्त तोरणा किला बीजापुर रियासत में था। जीते हुए तोरणा किले की मरम्मत करने के दौरान उन्हें वहाँ खुदाई करते समय खजाना हाथ लगा जिसका इस्तेमाल उन्होंने बाकी के किले जीतने, हथियार बनाने और खेती के काम में इस्तेमाल किया। अगले 2 साल में उन्होंने पूना के नज़दीक पुरंदर, कोंढाणा (सिहंगड), चाकण जैसे किलों को जीत लिया। तोरणा किले के सामने मुरुबंदेव नामक पहाड़ी को परखने के बाद वहां पर किला बनाया और उसका नाम रखा राजगढ़, जो आगे चलकर दस साल तक मराठा साम्राज्य की राजधानी बना रहा।

"राष्ट्र का संरक्षण करना है तो किले अपने पास होना बहुत जरुरी है, किले अपने पास हैं तो गया हुआ राष्ट्र वापस ले सकते हैं। लेकिन किले नहीं होने पर जो हाथ में बचा है वो भी चला जाएगा" ऐसा शिवाजी महाराज का कहना था। इसलिए उन्होंने बहुत सारे नये किलों का निर्माण किया। बहुत सारे किलों की मरम्मत करके अपने राज्य में शामिल किया।

आस-पास के प्रदेश की भरपूर जानकारी के साथ-साथ आश्चर्य कारक और गतिमान हलचल के चलते और गोरिला युद्ध तंत्र का इस्तेमाल करके अपने छोटे से सैन्य बल के साथ उन्होंने मुगल और आदिलशाही फौजों का सामना किया। उसके बाद शिवाजी महाराज ने कोकण प्रांत पर अपनी नज़रें जमायीं, कल्याण नामक शहर को जीतकर उसकी शुरुआत की। इसके चलते बीजापुर दरबार ने नाखुश होके शिवाजी महाराज को 25 जुलाई 1648 में पकड़ने की कोशिश की। लेकिन उनको न पकड़के बीजापुर सरकार ने बाजी घोरपडे नामक सरदार से शिवाजी महाराज के पिता शाहजी राजे को कैद कर लिया। अपने पिता की कैद के बाद शिवाजी महाराज अपनी हलचल को आराम देकर उन्होंने अपनी सेना संगठित करने का काम किया।

- **राज्याभिषेक** : 6 जून 1974 को बनारस के प्रसिद्ध पंडित गंगाभट्ट जी ने छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक किया और उन्हें कई उपाधियां दीं जैसे कि छत्रपति, हिंदुधर्म सुधारक, गो ब्राह्मण प्रतिपालक।

- **अष्टप्रधान मंडल :**

शिवाजी महाराज को एक कुशल और प्रबुद्ध सम्राट माना जाता है। अपने शासन काल में समूची बागडोर शिवाजी महाराज के हाथ में ही थी लेकिन, उन्होंने प्रशासकीय कार्यों में मदद के लिये शासन के कार्यों को सुचारु रुप से चलाने के लिये आठ मंत्रियों की एक परिषद बनायी थी जिन्हे अष्टप्रधान कहा जाता था। इस परिषद का प्रत्येक मंत्री अपने विभाग का प्रमुख होता था। अष्टप्रधान मंडल के सभी मंत्री महाराज के सचिव के रुप में काम करते थे।

मंत्रियों के प्रधान को पेशवा कहा जाता था, वही राजा के बाद प्रमुख थे। उनके बाद अमात्य होते थे जो वित्त और राजस्व के कार्यों को देखते थे तथा महाराज की व्यक्तिगत दैनंदिनी का खयाल रखने का काम अमात्य करते थे। उसके बाद सचिव होते थे जिनका कार्य दफ्तरी कामकाज में शाही मुहर लगाना, राजा के पत्र-व्यवहार और संधि पत्रों का आलेख तैयार करना भी शामिल था। उनके बाद सुमंत आते थे, इनका काम विदेश नीतियों पर ध्यान देना था। सेना के प्रधान को सेनापति कहा जाता था जो कि नौदल और पैदल सैनिकों के अधिपती थे। उन्हीं की आज्ञा से सैनिक कार्यवाही होती थी। वैसे ही दानधर्म और धार्मिक मामलों को पंडित सम्भालते थे। न्यायिक मामलों के प्रधान को न्यायाधीश कहा जाता था।

शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के समय में अष्टप्रधान मंडल की नींव रखी। लेकिन न्यायदान का अंतिम अधिकार छत्रपति महाराज ने अपने पास ही रखा था। अष्टप्रधान मंडल को राज्याभिषेक के समय धार्मिक विधि में स्थान देकर अपने राज्य मे समाविष्ट कर लिया। राज्याभिषेक के समय में सभी आठ मंत्रियों को सिहांसन के आठ दिशाओं में खड़ा किया था।

- **अष्टप्रधान मंडल और उनके नाम**

1. पंत प्रधान पेशवा : मोरोपंत त्रिंबक पिंगले
2. पंत अमात्य मजुमदार : रामचंद्र नीलकंठ
3. पंत सचिव सुरनीस : अण्णाजीपंत दत्तो
4. मंत्री वाकनीस : दत्ताजीपंत त्रिंबक
5. सेनापती सरननौबत : हंबीरराव मोहिते
6. पंत सुमंत डबीर : रामचंद्र त्रिंबक
7. न्यायाधीश : निराजी पंत रावजी
8. पंडितराव दानाध्यक्ष : मोरेश्वर पंडित

परग्रही मानव

जय प्रकाश
तकनीकी अधिकारी-ए

विकास के क्रम में मानव आज कहाँ सें कहाँ पहुच गया है। जंगलों में रहने वाली यह जीव प्रजाति जो कच्चे मांस खाकर दूसरे मांसाहारी जीवों की तरह भरण-पोषण करती थी आज कितने आलीशान महलों में रहकर भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन करते हुए आरामपूर्वक जीवन बिता रही है। किसी भी जीव के क्रमिक विकास में ऐसा कभी नहीं हुआ। मानव इतिहास में मनुष्य ने ऐसे कार्य भी कर दिये जो स्वयं मनुष्य ही असंभव समझा करता था। मानव के तेज दिमाग एवं उसकी मंहत्वाकांक्षा ने ऐसे-ऐसे अविष्कार कर डाले हैं कि वह मनुष्य को एक सुखद आरामदायी जीवन दे सकता है, साथ ही ऐसे खोज भी हुए हैं कि पृथ्वी से मानव के अस्तित्व को भी मिटा दे ।

आज मानव पृथ्वी के अलावा दूसरे ग्रहों में भी जीवन की तलाश कर रहा है । ब्रह्माण्ड में ग्रहों और तारों के बीच की दूरियाँ बहुत ज़्यादा है और मानव के रहने योग्य अब तक जिन ग्रहों की तलाश की गयी है वे हजारों-लाखों प्रकाश वर्ष दूर है। ऐसे में उन ग्रहों तक पहुँचना आज के मानव शरीर द्वारा वर्तमान में इस्तेमाल किये जाने वाले साधनों से संभव नहीं है। वैज्ञानिकों की माने तो ब्रह्माण्ड में प्रकाश की वेग से अथवा उससे तेज जाना संभव ही नहीं है। अगर मनुष्य प्रकाश के वेग से भी चलने वाले साधनों की खोज करले तब भी उसकी कितनी पीढ़ियाँ समाप्त हो जाएँगी ऐसे किसी ग्रह पर पहुँचने में जहाँ जीवन संभव हो सके। अतः मनुष्य की परग्रही होने के लिए दो बातें आवश्यक हो जाती हैं एक तो वह मानव को लगभग अमर बना दे या कह लें कि इतनी उम्र हो कि वह हजारों-लाखों वर्ष तक जीये तथा दूसरा यह कि वह ऐसे रास्तों या साधनों की खोज कर ले कि वह हजारों-लाखों प्रकाश वर्ष की दूरी को कम से कम समय में तय कर सके। ये दोनों ही बातें असंभव सी प्रतीत होती हैं परंतु ज्ञात हो आज जो कुछ वैज्ञानिक प्रगति संभव हुई है वह भी किसी समय मनुष्य के लिए असंभव सी प्रतीत होती रही होगी ।

अगर पहली बात कि तरफ ध्यान दें तो यह पता चलता है कि मानव के इस जैविक शरीर की अधिक से अधिक उम्र 100-200 वर्षो तक ही संभव है तो मनुष्य हजारों-लाखों वर्षो तक जीने के लिए खुद को मशीन में बदल ले या ऐसी तकनीक का आविष्कार कर ले कि वह खुद को मानव निर्मित शरीर में बदलता रहे। यह बात बिल्कुल सांइस फिक्शन हॉलीवुड की फिल्मों जैसी प्रतीत होती है लेकिन शायद भविष्य में यह संभव हो सके।

दूसरी बात की तरफ ध्यान दें तो ब्रह्माण्ड की अनंत दूरियों को तय करने के लिए प्रकाश की वेग से चलने वाले वाहनों की खोज असंभव लगती है। इस संबंध में वैज्ञानिकों ने वार्म-होल जैसे रास्तों की कल्पना की है और ऐसा माना जाता है कि ब्रह्माण्ड के बड़ी से बड़ी दूरियों के बीच कोई ऐसा शार्टकट रास्ता हो सकता है जहाँ से वर्षो में तय की जाने वाली दूरियों को सेकेण्डों में तय किया जा सके, पर ये सभी परिकल्पनाएँ हैं, परंतु

वैज्ञानिक खोजों के लिए परिकल्पनाओं का एक विशेष महत्व है। अतः मानव के परग्रही हो जाने के लिए अभी बहुत सारे खोजों का होना शेष है, इसमें दशकों, सैकड़ों या हजारों वर्ष भी लग सकते हैं और इस समय के दौरान मानव को पृथ्वी पर ही रहना पड़ेगा। पृथ्वी के सीमित संसाधनों का मनुष्य जिस अंधाधुंध रुप से उपयोग दुरुपयोग कर रहा है, शायद यह समय तय करने से पूर्व मानव सभ्यता समाप्त ना हो जाए। बढ़ती जनसंख्या, उसका भरण-पोषण, उसके शौक-जरूरतें पूरा करने के लिए जो भी संसाधन है अभी वह इसी पृथ्वी से ही प्राप्त करने हैं, जो कि सीमित हैं। पृथ्वी के संसाधनों पर बढ़ती जनसंख्या का बोझ लगातार बढ़ता जा रहा है, साथ ही जो लोग जितने सम्पन्न होते हैं उनके द्वारा संसाधनों का दुरूपयोग भी उतना ही ज्यादा हो रहा है। यह बात सबको समझने की बहुत आवश्यकता है कि पैसा आपका अवश्य है परंतु ये संसाधन सभी के हैं। ये संसाधन ना केवल मानव के है अपितु पृथ्वी के सभी जीवों के है, यह सभी जानते है कि हम सब एक दूसरे से जुड़े हैं । हम सभी जानते हैं कि सभी जीव-जन्तु, वनस्पति जैव तंत्र में सम्मिलित हैं और किसी के ना होने से दूसरे भी अवश्य प्रभावित होंगे। केवल अगर मधुमक्खी की ही बात की जाए तो अगर पृथ्वी से मधुमक्खियों का अस्तित्व मिट जाए तो मनुष्य एवं ना जाने कितने जीव-जन्तुओं के जीवन पर संकट छा जाएगा। अतः मनुष्य को विकास के रास्ते पर चलते हुए पीछे मुड़कर भी देखने की आवश्यकता है कि वह पृथ्वी पर कितना विनाश भी कर रहा है। अतः एक संतुलित विकास की आवश्यकता है और एक संतुलित विकास में प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग ही सम्मिलित हो सकता है ना कि दुरुपयोग।

जिस व्यक्ति का मन आज़ाद नहीं है,
भले ही वह जंजीरों में न बंधा हो,
वह गुलाम है, आज़ाद नहीं।
- डॉ. बी. आर. अंबेडकर

अनुशासन

मोनु कुमार
भण्डार सहायक - ए

शिक्षा और विकास के क्षेत्र में अनुशासन एक महत्वपूर्ण विषय है। अनुशासन मानवीय संसाधनों का एक मूल तत्व है जो व्यक्ति को संगठित, नियमित और सफल बनाता है यह व्यक्ति को स्वयं से नियंत्रित करने, समय प्रबंधन करने, लक्ष्य की प्राप्ति और संगठित रूप से विकसित करता है। अनुशासन एक महत्वपूर्ण गुण है, जो हमारे जीवन में बहुत महत्व रखता है।

अनुशासन - परिभाषा और अर्थ : अनुशासन का अर्थ व्यवस्थित, नियमित और विनियमित तरीके से जीवनयापन करना है, यह व्यक्ति के समय, संसाधनों और सामग्री का उचित उपयोग करने में मदद करता है। अनुशासन व्यक्ति को संगठित रखता है और उसे लगातार उन गतिविधियों से अवगत कराता है, जो सफलता के लिए आवश्यक हैं। इसके बिना जीवन अनियमित दिखायी देता है, यह एक नियमित जीवनशैली को अभिव्यक्त करने वाला गुण है। इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति नियम और संयम के साथ अपना काम नियंत्रित करता है, अनुशासन व्यक्ति को आदर्श और सामाजिक नियमों का पालन करने की क्षमता प्रदान करता है।

अनुशासन के लाभ : अनुशासन एक महत्वपूर्ण गुण है जो एक व्यक्ति के जीवन में विभिन्न लाभ प्रदान कर सकता है। यहां कुछ प्रमुख लाभ दिये जा रहे हैं -

i) **सफलता की पूँजी** – अनुशासन व्यक्ति को सफलता की ओर ले जाने का मार्ग दर्शाता है, यह उन्नति, संगठन, क्षमता, समय प्रबंधन और उच्चतम स्तर की प्रदर्शन को संभव बनाता है।

ii) समय की बचत – अनुशासन व्यक्ति को समय का महत्व समझाता है और उससे व्यक्ति अपने सभी कार्यों को समय से कर सकता है।

iii) संगठनशीलता – अनुशासन व्यक्ति को संगठनशीलता की आदत प्रदान करता है, वह अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आदेश, व्यवस्था और शांति बनाये रखता है।

iv) स्वस्थ जीवनशैली – अनुशासन व्यक्ति को स्वस्थ खान-पान, नियमित व्यायाम और समयानुकूल आराम करने के लिए प्रेरित करता है।

समाज में अनुशासन की आवश्यकता : अनुशासन सामाजिक एवं आर्थिक सुरक्षा, व्यवस्थित और उच्चतम कार्य प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज के अंतर्गत अनुशासन, सभ्यता और नैतिकता निभाता है, समाज के न्याय, समानता एवं सहयोग को सुरक्षित रखता है। इसके बिना समाज अनुसूचित गतिविधियों से प्रभावित हो सकता है।

अनुशासन मानवीय विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह व्यक्ति का आत्मविश्वास और समर्पण विकसित करता है। अनुशासन के बिना व्यक्ति का जीवन असुरक्षित दिखायी देता है।

अनुशासन की अधिवृद्धि के लिए उपाय – अनुशासन को विकसित करने के लिए हमें नियमित, स्व नियंत्रण और समर्पण की आवश्यकता होती है। यदि हम व्यक्तिगत रूप से अनुशासन को स्थायी बनाना चाहते हैं, तो हमें अभ्यास, स्वस्थ जीवनशैली, व्यवस्थित संगठन और नियमित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।

अनुशासन मानवीय विकास और सामाजिक व्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व है। यह व्यक्ति को संगठित, नियमित और सफल बनाता है और उसे समय प्रबंधन, कर्मठता, संगठनशीलता और सामाजिकता का विकास करना है।

अनुशासन को अपनाने से जीवन में व्यावहारिक सुधार होता है, यह समय प्रबंधन, स्वस्थ जीवन के कार्य की नियमितता, सामाजिकता और शारीरिक संबंधों को सुधारता है। अनुशासन व्यक्ति को संयमित और स्वावलंबी बनाता है। अनुशासन में रहकर हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं, अनुशासन सफलता की चाबी है, अनुशासन के बिना जीवन व्यर्थ हो जाता है।

समय वर्ष बीतने से नहीं
मापा जाता बल्कि आपने
क्या हासिल किया इससे
मापा जाता है।

- पंडित नेहरू

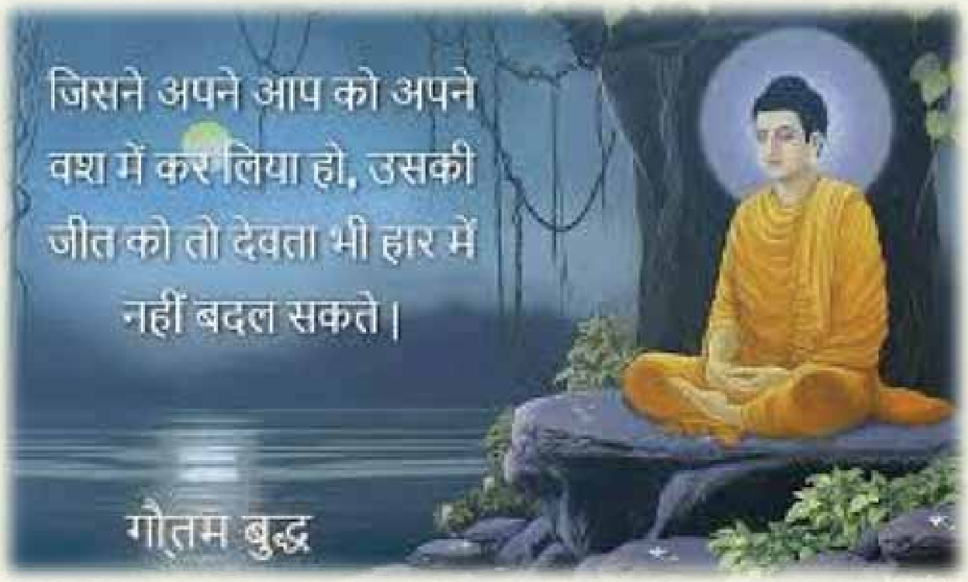

योग और इसके लाभ

विवेक कुमार मिश्रा
वैज्ञानिक-बी

योग एक प्राचीन भारतीय प्रणाली है जो शरीर, मन और आत्मा के सामंजस्य को प्राप्त करने के लिए विकसित की गयी है। इसके मूल तत्व प्राचीन वेदों और उपनिषदों में पाये जाते हैं। योग का अर्थ है 'जोड़ना' या 'संयुक्त करना', और इसका उद्देश्य जीवन के विभिन्न पहलुओं को एकता में लाना है। आज के आधुनिक युग में भी योग की प्रासंगिकता बनी हुई है और इसे दुनियाभर में अपनाया जा रहा है।

योग के प्रकार

योग के कई प्रकार होते हैं, जिनमें प्रमुख हैं :

1. **हठ योग:** यह शरीर की शारीरिक स्थिति और श्वास पर ध्यान केंद्रित करता है। इसमें विभिन्न आसनों (यौगिक मुद्राएं) और प्राणायाम (श्वास नियंत्रण) को शामिल किया जाता है।

2. **राज योग**: यह मानसिक और आत्मिक विकास पर जोर देता है। इसमें ध्यान और साधना (मेडिटेशन) का महत्व होता है।

3. **भक्ति योग**: यह भक्ति और पूजा पर आधारित है। इसमें ईश्वर या ब्रह्म के प्रति समर्पण और प्रेम को प्राथमिकता दी जाती है।

4. **कर्म योग**: यह कार्य और सेवा में पूर्णता और निष्काम भाव से कार्य करने की कला है। इसमें कर्म के फल की चिंता किये बिना काम करना सिखाया जाता है।

5. **ज्ञान योग**: यह ज्ञान और आत्मा के सच्चे स्वरूप को जानने पर केंद्रित है। इसमें वेदांत के सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है।

योग के लाभ

योग के अनेक लाभ हैं, जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करते हैं। निम्नलिखित कुछ प्रमुख लाभ हैं:

शारीरिक लाभ

1. **लचीलेपन में वृद्धि**: योग के नियमित अभ्यास से शरीर में लचीलापन आता है और मांसपेशियों की ताकत बढ़ती है।

2. **शरीर की मजबूती**: आसनों के अभ्यास से शरीर की मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं और हड्डियाँ भी स्वस्थ रहती हैं।

3. **सही मुद्रा**: योग के आसन सही शरीर की मुद्रा को बनाए रखते हैं, जिससे पीठ और गर्दन में दर्द की समस्या कम होती है।

4. **संतुलित वजन**: योग से कैलोरी बर्न होती है और पाचन तंत्र सही रहता है, जिससे वजन नियंत्रित रहता है।

5. **साँसों का नियंत्रण**: प्राणायाम के माध्यम से श्वास की गति पर नियंत्रण होता है, जिससे शारीरिक और मानसिक शांति मिलती है।

मानसिक लाभ

1. **तनाव में कमी:** योग और ध्यान मानसिक तनाव को कम करने में सहायक होते हैं। यह मानसिक शांति और संतुलन को बढ़ावा देते हैं।

2. **स्मरणशक्ति में सुधार**: योग मानसिक एकाग्रता को बढ़ावा देता है, जिससे स्मरणशक्ति और फोकस में सुधार होता है।

3. **भावनात्मक स्थिरता**: योग भावनात्मक असंतुलन को दूर करता है और मन को शांति प्रदान करता है।

4. **आत्मविश्वास में वृद्धि**: नियमित योग अभ्यास से आत्म-स्वीकृति और आत्म-संयम बढ़ता है, जिससे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

आत्मिक लाभ

1. **आध्यात्मिक विकास**: योग आत्मिक और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देता है और आत्मा के सच्चे स्वरूप को जानने में मदद करता है।

2. **संतुलित जीवन**: योग जीवन के विभिन्न पहलुओं को संतुलित करने में मदद करता है, जैसे कि शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्थिति।

3. **आध्यात्मिक जागरुकता**: योग से व्यक्ति आत्मा और ब्रह्म के प्रति जागरुकता प्राप्त करता है और जीवन के गहरे अर्थ को समझता है।

योग का अभ्यास कैसे करें

योग का अभ्यास करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें:

1. **नियमितता**: योग का लाभ प्राप्त करने के लिए नियमित अभ्यास आवश्यक है। रोजाना कम से कम 30 मिनट का अभ्यास करें।

2. **सही वातावरण**: योग करने के लिए शांत और हवादार स्थान का चयन करें।

3. **सही मुद्रा**: योग आसनों को सही ढंग से करें और अपनी सीमाओं का सम्मान करें।

4. **स्वस्थ आहार**: योग के साथ-साथ संतुलित और पौष्टिक आहार का सेवन भी जरूरी है।

5. **ध्यान और प्राणायाम**: आसनों के साथ-साथ ध्यान और प्राणायाम का अभ्यास भी करें ताकि मानसिक शांति प्राप्त हो।

निष्कर्ष - योग एक सम्पूर्ण जीवनशैली है जो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य को सुधारने में सहायक होती है। इसके नियमित अभ्यास से व्यक्ति स्वस्थ, खुशहाल और संतुलित जीवन जी सकता है। योग का अभ्यास जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यदि आप योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करते हैं, तो न केवल आपका शरीर बल्कि आपका मन और आत्मा भी स्वस्थ और संतुलित रहेंगे।

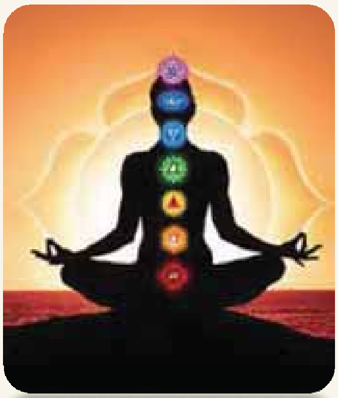

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपका अपने लक्ष्य के प्रति एकनिष्ठ समर्पण होना चाहिए।

- डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

हिंदी दिवस

एम. स्वप्न कुमारी
वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक

भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। इनमें से हिंदी भाषा का विशेष महत्व है। हिंदी, न केवल भारत की राजभाषा है , बल्कि भारतीय संस्कृति और पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी है। हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है ताकि हिंदी भाषा के महत्व को समझा जा सके और इसे बढ़ावा दिया जा सके।

14 सितंबर 1949 को भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को देश की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस निर्णय को मान्यता देने और हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। हिंदी को देवनागरी लिपि में लिखा जाता है और यह विश्व की सबसे समृद्ध भाषाओं में से एक है।

हिंदी भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह देश के अनेक हिस्सों में संपर्क भाषा के रूप में कार्य करती है। हिंदी साहित्य भी बेहद समृद्ध है, जिसमें तुलसीदास, कबीर, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा जैसे महान साहित्यकारों का योगदान है। हिंदी सिनेमा, जिसे हम बॉलीवुड के नाम से जानते हैं, ने भी हिंदी के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हालांकि हिंदी भारत की राजभाषा है, परंतु आज भी इसे वह सम्मान और स्थान नहीं मिल पा रहा है जो इसे मिलना चाहिए। अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव और तकनीकी युग में हिंदी के प्रति लोगों की रुचि कम होती जा रही है। इसके बावजूद, हिंदी का वैश्विक प्रभाव भी बढ़ रहा है और यह इंटरनेट पर सबसे तेजी से बढ़ने वाली भाषाओं में से एक है।

हिंदी दिवस हमें हमारी भाषा और संस्कृति के महत्व को समझने का अवसर देता है। हमें गर्व होना चाहिए कि हम हिंदी जैसी समृद्ध और व्यापक भाषा का हिस्सा हैं। यह हमारा कर्तव्य है कि हम हिंदी को न केवल अपनी भाषा के रूप में अपनाएँ, बल्कि इसे आने वाली पीढ़ियों तक भी पहुँचाए। भाषा के विकास के साथ-साथ हमें इसका सम्मान भी बनाये रखना चाहिए।

व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित एक प्राणी है,
वह जो सोचता है वही बन जाता है।

- महात्मा गाँधी

शंख के कुछ तथ्य

डॉ. जितेन दास
वैज्ञानिक-एफ

सुंदर सर्पिल सी-शेल एक मोलस्क है जो टर्बिनिडे परिवार से संबंधित है, जो भारतीय और प्रशांत महासागरों में पाया जाता है। शंख 12 इंच तक लंबा हो सकता है। यह जानना दिलचस्प है कि शंखों की 200 से अधिक प्रजातियाँ हैं, लेकिन केवल कुछ को ही हिंदू धर्म में पवित्र माना जाता है।

यह महत्वपूर्ण खनिजों से बना है, जिसका उपयोग औषधियों (शंख-पुष्प) के रूप में किया जाता है। इसकी लंबाई (61.8034%) और चौड़ाई (38.1966%) के अनुपात को दिव्यांक अनुपात कहा जाता है। दिव्यांक अनुपात प्रकृति के सबसे किफायती एल्गोरिद्म का प्रतिनिधित्व करता है। शंख की संरचना प्रकृति की सबसे किफायती डिज़ाइन का प्रतिनिधित्व करती है। शंख का प्रत्येक सर्पिल 22/21 के अनुपात के बराबर है। प्रत्येक पूर्ण शंख में 10.34419 सर्पिल होते हैं। ॐ तथा शंख ध्वनि की आवृत्ति 8.73 हर्ट्ज़ होती है। 8.73 हर्ट्ज़ आवृत्ति आकाश-कोश (आयनमंडल) की आवृत्ति है। आकाश-कोश भूत, वर्तमान और भविष्य की घटनाओं का भण्डार है।

ऐसा माना जाता है कि इसे आपके घर या कार्यस्थल के विभिन्न कोनों में रखने से सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है, संतुलन और शांति को बढ़ावा मिलता है। शंख से उत्पन्न ध्वनि वातावरण को शुद्ध करती है, नकारात्मक ऊर्जा को दूर करती है और सकारात्मकता लाती है। जब इसे किसी धार्मिक अनुष्ठान से पहले या उसके दौरान फूँका जाता है, तो इसे आसपास के वातावरण को शुद्ध करने के साधन के रूप में देखा जाता है, जिससे यह दैवीय गतिविधियों के लिए अनुकूल हो जाता है।

यह बताया गया कि नियमित रूप से शंख बजाने से जीभ की चर्बी कम होती है, ओरोफेशियल संबंधी कई समस्याओं से बचाव होता है।

सफल व्यक्ति बनने की कोशिश मत करो,
बल्कि मूल्यवान व्यक्ति बनने की कोशिश करो।
- अल्बर्ट आंइस्टीन

हमारे दैनिक जीवन में विज्ञापन

पवन कुमार
सहायक निदेशक (रा.भा.)

हम अपनी जीवनशैली को सुगम बनाने के लिए अपने दैनिक जीवन में कई प्रकार की वस्तुओं का प्रयोग करते हैं जो हमें या तो आसानी से मिल जाती है या फिर कुछ विशेष प्रयास के बाद प्राप्त होती है। अपनी आवश्यकताओं के अनुसार इन वस्तुओं के लिए हम किसी न किसी रूप में विज्ञापनों पर निर्भर हैं।

'विज्ञापन' शब्द 'वि' और 'ज्ञापन' से मिलकर बना है। 'वि' का अभिप्राय 'विशिष्ट' तथा 'ज्ञापन' का अभिप्राय सूचना से है। अर्थात विज्ञापन का अर्थ 'विशिष्ट सूचना' से है। आधुनिक समाज में 'विज्ञापन' व्यापार को बढ़ाने वाले माध्यम के रूप में जाना जाता है। मानव सभ्यता के विकास यात्रा को आदिकाल से वर्तमान युग तक देखा जाए तो इसके क्रमिक व निरंतर विकास में कला और विज्ञान संग विज्ञापन के क्षेत्र में हुए विस्तार और विकास को देखा जा सकता है। यह कहा जा सकता है कि विज्ञापन के विकास संग मानव सभ्यता के विकास की कहानी जुड़ी है। समय के साथ संचार माध्यमों में भी बदलाव व विकास हुआ तथा विज्ञापनों के स्वरूप में भी बदलाव आया। द न्यू एनसाईक्लापीडिया ब्रिटानिका के अनुसार-

'विज्ञापन' सम्प्रेषण का वह प्रकार है जो उत्पादक अथवा कार्य को उन्नत करने, जनमत को प्रभावित करने, राजनीतिक सहयोग प्राप्त करने, एक विशिष्ट कारण को आगे बढ़ाने अथवा विज्ञापनदाता द्वारा कुछ इच्छित प्रतिक्रियाओं को प्रकाशित करने का उद्देश्य रखता है।'

विज्ञापन आज के युग का सबसे मजबूत माध्यम है जिसके जरिए आप अपनी वस्तु को बेच सकते हैं या किसी वस्तु को खरीदने से पहले उसके बारे में काफी कुछ जान सकते हैं। जब हम अपनी खरीद सूची से कोई वस्तु खरीदने का मन बनाते हैं तो मस्तिष्क सक्रिय हो जाता है और जिस वस्तु को खरीदना है उसकी जानकारी प्राप्त की जाती है जिससे निर्णय लेने में भी आसानी होती है।

व्यवसायिक तौर पर विज्ञापन का मतलब ग्राहकों को किसी भी वस्तुओं एवं सेवाओं की जानकारी देकर उन्हें अपनी तरफ आकर्षित करना है। आसान शब्दों में हम कह सकते हैं ग्राहकों को सेवाओं और वस्तुओं के गुणों के बारे में बता कर उन्हें अपनी चीजें खरीदने या सेवाओं को लेने के लिए प्रोत्साहित करना ही विज्ञापन या प्रचार कहलाता है। अंग्रेजी के शब्द Advertising की उत्पत्ति लैटिन के Advertise शब्द से हुई है। इसका मतलब होता है मोड़ना या आकर्षित करना। आजकल विज्ञापन के महत्व को समझा जा रहा है तथा यह विश्वास किया जा रहा है कि विज्ञापन किसी भी वस्तुओं, सेवाओं और विचारों की बिक्री को काफी हद तक बढ़ावा दे सकता है। विज्ञापन में निहित संदेशों को मीडिया के माध्यम से लोगों तक पहुँचाया जा रहा है तथा पूरे विश्व में वस्तुओं के प्रचार और उनके संबंध में जानकारी देने के लिए इनका महत्व और भी बढ़ता जा रहा है। मीडिया के लिए आय का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है - विज्ञापन। इसके अंतर्गत समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो, प्रेस आदि

आते हैं। अमेजॉन और फिल्पकार्ट जैसी ऑनलाइन साइटों में वस्तुओं के प्रचार कई लोगों के माध्यम से करवाए जाते हैं। यह भी विज्ञापन का एक रूप है।

विज्ञापन के कुछ प्रकार नीचे दिये गये हैं -

उपभोक्ता संबंधी विज्ञापन

दैनिक जीवन की उपयोगी वस्तुओं की जानकारी इस प्रकार के विज्ञापन में होती है। इन विज्ञापनों के अंतर्गत कपड़े, साबुन, तेल, खाने-पीने की वस्तुएं, पेय पदार्थ, चाय, बिस्कुट, स्कूटर व साइकिल आदि रोजाना जरूरतों की चीजें होती हैं। इसे विज्ञापन का सबसे लोकप्रिय रूप माना जाता है। इनमें वस्तुओं के दामों में छूट, समान दाम में वस्तु की अधिक मात्रा आदि बातों संग वस्तुओं की विशेषताएं बतायी जाती हैं।

वर्गीकृत

इस प्रकार के विज्ञापन ज़्यादातर छोटे, कम महंगे तथा कम सजे हुए होते हैं जिसके अंतर्गत शादी-विवाह, रोजगार, किराए हेतु घर, नौकरी आदि कार्यों से संबंधित होते हैं। कम खर्चों पर इस प्रकार के विज्ञापनों को समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में किसी निश्चित स्थान पर तीन चार लाइनों में लिख दिया जाता है। इन्हें समाचार पत्रों में देखा जा सकता है।

व्यापारिक

इस प्रकार के विज्ञापनों का संबंध थोक विक्रेता से होता है। वाशिंग पाउडर या फिर किसी खास ब्रांड के गारमेंट की थोक खरीद में बड़े उपहारों की घोषणा वाले ऐसे विज्ञापन पत्र-पत्रिकाओं में ज़्यादातर देखे जा सकते हैं।

शिक्षाप्रद विज्ञापन

कुछ विज्ञापनों का उद्देश्य लोगों को नयी जानकारियाँ देना होता है जैसे पर्यावरण संरक्षण, सर्व शिक्षा अभियान, जनसंख्या नियंत्रण आदि को बढ़ावा देना। सरकारी संस्थाओं के द्वारा जारी किये जाने वाले इन विज्ञापनों का उद्देश्य आर्थिक लाभ कमाना नहीं होता है।

सजावटी विज्ञापन

यह विज्ञापन सबसे अच्छे माने जाने वाले तथा दिखने में सुंदर और अधिक जानकारी देने वाले होते हैं। इनके छपने का स्थान तय नहीं होता बल्कि यह विज्ञापन देने वाले की इच्छा के अनुसार स्थान और आकार में छापे जाते हैं तथा इनकी कीमत भी इनके आकार और छपने वाले पन्ने के आधार पर अलग-अलग होती है। इस प्रकार के विज्ञापन महंगे भी होते हैं।

औद्योगिक विज्ञापन

इस प्रकार के विज्ञापन उद्यमियों (Entrepreneur) या एक निश्चित वर्ग के लोगों के लिए जारी किये जाते हैं तथा औद्योगिक धंधों से संबंधित वस्तुओं जैसे उपकरण, कच्चा माल इत्यादि की बिक्री के उद्देश्य से किये जाते हैं। इसके अंतर्गत बड़े उद्योगपति छोटे उद्योग में अपना कच्चा माल बेचने के लिए इस तरह के विज्ञापनों का सहारा लेते हैं।

वित्तीय विज्ञापन

बीमा कंपनी, बैंक, वित्तीय संस्थाएँ आदि अपने शेयर जारी करने के लिए इस तरह के विज्ञापन जारी करती हैं। वित्तीय विज्ञापन अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं और डाक के माध्यम से भी भेजे जाते हैं। अतः यह विज्ञापन मुख्य रूप से पैसों से संबंधित होता है।

राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञापन

यह किसी वस्तु या सेवा का राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञापन करते हैं। विभिन्न राज्यों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय विज्ञापन एक से अधिक भाषाओं में तैयार किये जाते हैं। सौंदर्य प्रसाधन (Cosmetics), घरेलू उपकरण, मोबाइल इत्यादि जैसे अनेकों विषय का विज्ञापन राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है। क्रिकेट मैच के दौरान दिखाये जाने वाले विज्ञापन भी इसी तरह के होते हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विज्ञापन

जब कोई संगठन या कंपनी एक से अधिक देशों में किसी वस्तु या सेवा का प्रचार करने के लिए विज्ञापन करती है तो ऐसे विज्ञापन को अंतरराष्ट्रीय विज्ञापन कहा जाता है। यह विज्ञापन बहुत खर्चीले होते हैं और इनकी भाषा तथा माध्यम का चुनाव बहुत सोच समझ कर किया जाता है। अधिकतर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ इस तरह के विज्ञापन जारी करती हैं।

स्थानीय विज्ञापन

इस तरह के विज्ञापन स्थानीय स्तर पर वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने के लिए दिये जाते हैं। यह स्थानीय लोगों की पसंद को ध्यान में रखकर बनाया जाता है। छोटे क्षेत्र में किसी वस्तु के प्रचार के लिए स्थानीय समाचार पत्रों, क्षेत्रीय टीवी चैनलों, केबल नेटवर्क, बैनर और पोस्टर इत्यादि का प्रयोग किया जाता है।

विज्ञापन के कुछ मुख्य कार्य इस प्रकार हैं -

- वस्तुओं की उपयोगिता और विशेषता बताना तथा उसकी ओर लोगों को आकर्षित करना।
- मार्केट में आने वाली नवीन वस्तुओं और सेवाओ की जानकारी लोगों को देना।
- किसी प्रकार की विशेष छूट देते हुए उपभोक्ता की माँग में वृद्धि करना।
- वस्तुओं के प्रति उपभोक्ताओ में रुचि तथा विश्वास उत्पन्न करना।
- बाजार में उत्पाद कम्पनियों को स्थिरता प्रदान करना
- उपभोक्ताओं की स्मृति को प्रभावित करना।
- अन्य उत्पाद कम्पनियों के उत्पादनों की तुलनात्मक जानकारी देना।

आज भी टेलीविज़न विज्ञापन का प्रभावी तरीका है। किसी भी सीरियल या फिल्मों के बीच में विज्ञापन के माध्यम से उत्पादों का विज्ञापन पुनः दोहराया जाता है। सिनेमाघरों में भी किसी विशेष उत्पाद को विशेष रूप से क्षेत्रीय भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। स्थानीय विज्ञापनों के लिए होर्डिंग का सहारा लिया जाता है। दवाओं की दुकानों पर अधिकतम छूट प्रदान करने के विज्ञापन अक्सर देखे जा सकते हैं, इनमें से कई मेडप्लस व अपोलो फार्मेसी की फ्रेंचायज़ी होती हैं। इसके अतिरिक्त रियल स्टेट से जुड़े विज्ञापन होते हैं जो कि किसी शहर के लोकप्रिय लोकेशन पर आकर्षक दर पर तथा विशेष सुविधाएँ प्रदान करते हुए प्रस्तुत किये जाते हैं। जब स्मार्ट फोन नहीं हुआ करते थे, टेलिविज़न सीमित लोगों के पास हुआ करता था, तब क्रिकेट मैच का रेडियो

पर 'आँखों देखा हाल' द्वारा ही चेहरे पर मुस्कान बिखेरी जाती थी। आजकल सुपरमार्केट कुछ विशेष उत्पादनों पर अधिकतम छूट संबंधी पेंपलेट छपवाते हैं तथा कुछ राशि भुगतान करने पर सदस्यता देते हैं, कहीं-कहीं वस्तुओं के लिए फ्री होम डेलेवरी की सुविधा दी जाती है। यह सब बिक्री बढ़ाने के लिए किया जाता है।

विज्ञापन के गुण -

विज्ञापन का दायरा काफी विस्तृत है, किसी वर्ग विशेष को ध्यान में रखकर भी विज्ञापन बनाये जाते हैं। किसी भी विज्ञापन का गुण व प्रस्तुति ही लोगों को आकर्षित करती है। विज्ञापन की सफलता उसकी सुबोधता, प्रस्तुति, शैली तथा भाषा द्वारा ध्यान आकर्षित करने की क्षमता पर निर्भर करती है। अभिनव एवं मौलिक साज-सज्जा वाले विज्ञापन अधिक प्रभावित करते हैं। विज्ञापन में उत्पाद अथवा वस्तु विशेष की मुख्य विशेषता को बल दिया जाना चाहिए। यह भी आवश्यक है कि उत्पाद की मुख्य बातें या केन्द्रिय बिंदु को आधार बनाकर विज्ञापन को प्रभावी व तर्कसंगत बनाया जाए। यदि विज्ञापन ऐसे क्षेत्र में प्रस्तुत किये जा रहे हैं जहाँ लोगों को पढ़ने-लिखने में दिक्कत होती है तो वहाँ चित्रों का सहारा लेकर अधिक सुबोध बनाया जाए। विज्ञापनों में तथ्यों को तर्कपूर्ण रूप से प्रस्तुत कर लोगों के लिए अधिक ग्राह्य बनाया जा सकता है जिससे वे विज्ञापन के प्रति अपनापन महसूस करते हैं।

1990 के दशक में टी.वी. के विज्ञापनों ने उत्पादों को काफी लोकप्रिय किया और वे विज्ञापन सभी की जुबाँ पर इस प्रकार चढ़कर बोलता था जैसे उस वस्तु से बेहतर वस्तु आपको नहीं मिल सकती। कुछ चर्चित उत्पादों के विज्ञापन इस प्रकार हैं –

वी.आई.पी. सूटकेस	-	कल भी, आज भी, कल भी......
बजाज स्कूटर	-	बुलंद भारत की बुलंद तस्वीर....
नेरोलेक पेंटस्	-	जब घर की रौनक बढ़ानी हो, जब घर को सजाना हो......
वाशिंग पाउडर निरमा	-	वाशिंग पाउडर निरमा, दूध सी सफेदी, निरमा से आयी....
पेप्सी	-	ये दिल माँगे मोर......
अमूल	-	द टेस्ट ऑफ इंडिया

ये ऐसे विज्ञापन थे जिन्होंने जन-जन के स्मृति पटल पर अपनी छाप छोड़ी थी, बच्चे व वयस्क इनको दोहराते थे तथा आज भी याद किया करते हैं। विज्ञापनों का शीर्षक, आकर्षण का केंद्र होता है, अतः इनका चुनाव काफी सोच-समझकर व उद्देश्य के अनुसार रखना चाहिए, इसमें गत्यात्मक संकेत होने आवश्यक हैं जिससे विज्ञापन देखने वाला व्यक्ति विज्ञापन से प्रभावित होकर उस वस्तु को उपयोग करने के लिए अपना मन बनाये।

कहा जा सकता है कि आज के युग में विज्ञापन के विभिन्न रूप लोगों को उनकी दैनिक आवश्यकता और रूचि के अनुसार लुभा रहे हैं। बाजार प्रधान समाज में विज्ञापन की भूमिका उपभोक्ता, समाज और उत्पादन के बीच संबंध स्थापित करना हो गयी है। ऐसे में वस्तु की जानकारी देने का कार्य विज्ञापन करता है तथा बेचने वाला दुकानदार या यूँ कहें की विक्रेता भी लाभ कमाता है। विज्ञापन के माध्यम से वस्तु की पहचान होने पर विक्रेता के लिए वस्तु को बेचना सरल हो जाता है। विज्ञापन के माध्यम से ही किसी वस्तु विशेष के लिए

नये बाजार का निर्माण होता है, नयी वस्तुओं के गुणों व उपयोगिता की जानकारी देकर इसके प्रयास किये जाते हैं। आज का विज्ञापन समाज में मानव के जीवनस्तर को बेहतर बना रहा है। विज्ञापन का क्षेत्र काफी विस्तृत होने के कारण आजकल देश, राज्य या किसी क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त होने वाली भाषा में विज्ञापनों को सुना जा सकता है। अतः हमारे दैनिक जीवन में विज्ञापनों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है, एक प्रकार से यह हमारे जीवन का हिस्सा बन गयी है तथा बाजार में आने वाले नए उत्पाद व वस्तु के विज्ञापनों की हमें तलाश रहती है ताकि हम अपनी जीवनशैली को बेहतर व आरामदायक बना सकें।

प्रशासनिक हिंदी

आशीष कुमार मिश्र
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होने के साथ-साथ भाषा सामाजिक व्यवहारों की भी वस्तु है। फलत: भाषा-विशेष के द्वारा उसके बोलने वाले समूहों की जातिगत विविधता, उनकी संश्लिष्ट संस्कृति आदि की अभिव्यक्ति होती है। भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। यहाँ कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक अनेक भाषाओं, उपभाषाओं एवं बोलियों की एक सुदीर्घ तथा समृद्ध ऐतिहासिक परंपरा रही है और इन भाषाओं, उपभाषाओं तथा बोलियों से इनके बोलने वालों की संस्कृति का सीधा संबंध रहा है। भिन्न-भिन्न भाषा-समाजों की संस्कृति में तमाम विभिन्नताएँ होने के बावजूद हमें एकता के ही दर्शन होते हैं और यह एकता है - भावनात्मक एकता। सभी भाषाओं के भारतीय साहित्य में देश की सांस्कृतिक गरिमा, यहाँ की सभ्यता, यहाँ के आदर्श और जीवन के शाश्वत मूल्यों को समान रूप से वाणी मिली है। यही कारण है कि सभी भारतीय भाषाएँ भावना और विचारों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में इस धरती पर सांस्कृतिक एकता की पावन गंगा प्रवाहित करती है। संक्षेपत: इस देश की सामासिक संस्कृति के विकास में संस्कृत, हिंदी तथा अन्य सभी भाषाओं का महत्वपूर्ण स्थान है।

हिंदी एक ऐसी समर्थ भाषा है जो भारतवर्ष के सभी प्रांतों में कमोवेश बोली एवं समझी जाती है। देश के सामाजिक विकास से इसका गहरा संबंध है। यह उच्च, मध्य, निम्न, शिक्षित, अर्द्धशिक्षित, अशिक्षित आदि सभी वर्गों की भाषा है। इसका अपना व्याकरण है, शब्दकोश है एवं औपचारिक शिक्षण रूप है। वस्तुत: यह एक जीवंत भाषा है और एक विकसित भाषा की भाँति सभी प्रकार्यों को पूरा करने में सक्षम है। यही कारण है कि स्वाधीनता संग्राम के समय देश में जो राष्ट्रव्यापी आंदोलन चला, उस समय सुदूर उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक सारे भारतवर्ष को एक सूत्र में जोड़ने का काम हिंदी ने किया। अखिल भारतीय भाषा के रूप में संस्कृत के बाद इसी ने ही संपूर्ण जनमानस को जोड़ने का कार्य किया। धीरे-धीरे प्रशासकीय कार्यों में भी अपना सिक्का जमाना शुरू किया और आज इसकी जड़ इस क्षेत्र में काफी गहरी हो चुकी है, इतनी गहरी हो चुकी है कि आज हम 'प्रशासनिक हिंदी' पर अलग से विचार-विमर्ष करने लगे हैं ताकि इसके मार्ग में आनेवाली तमाम कठिनाइयों को दूर कर प्रशासन के क्षेत्र में अंग्रेजी के प्रभुत्व को अपदस्थ कर सके। स्वस्पष्टता शैली का महत्वपूर्ण गुण है। यह गुण अधिकारी या कर्मचारी की व्यक्तिगत क्षमता पर आधारित है।

यथासंभव-असंदिग्धता : प्रशासनिक भाषा में क्लिष्टता, अस्पष्टता तथा अप्रचलित प्रयोग से संदिग्धार्थता की संभावना रहती है। संदिग्धार्थता प्रशासन के लिए घातक होती है। जो मूल बात कही जाती है उसका एक ही अर्थ होना चाहिए। द्वि-अर्थी या अनेकार्थी होने से कार्रवाई में या तो बाधा पड़ती है या उसमें कोई गलती होने की संभावना होती है। अर्थ का संदिग्ध होना या अनिश्चित होना कार्रवाई में बाधा डालना है। अत: प्रशासनिक हिंदी में लक्षणा और व्यंजना का स्थान नहीं है। अभिधा-शक्ति प्रशासनिक हिंदी की शक्ति है।

वर्णनात्मकता : प्रशासनिक हिंदी या कार्यालयी हिंदी में आवश्यक तथ्यों का विवरण दिया जाता है। इस विवरण में विचाराधीन विषय से संबंधित सारी सामग्री को क्रमवार दिया जाता है। इसमें प्रत्येक मामले का संक्षिप्त विवरण देते हुए मूल कथ्य का परिचय दिया जाता है। इसमें मूल्यांकन की गुंजाइश कम रहती है, तथ्यों के वर्णन की अधिक। अत: प्रशासनिक हिंदी में तथ्यों का सही-सही निरूपण अत्यावश्यक है।

प्रत्येक भाषा की शब्द-संपदा विभिन्न स्रोतों से निर्मित होती है। यही स्थिति प्रशासनिक हिंदी की भी है जिसकी शब्दावली में विभिन्न स्रोतों के शब्द मिलते हैं। इसका कारण, जैसा कि आरंभ में लिखा जा चुका है, यह है कि इस देश में पहले राजभाषा संस्कृत थी। तत्पश्चात् अरबी-फारसी राज-काज की भाषा के रूप में प्रयुक्त होती रही और इसी कारण, अदालतों की भाषा प्राय: अरबी-फारसी-प्रधान उर्दू-शैली रही है। ब्रिटिश शासन के दौरान अंग्रेजी ने राजभाषा का स्थान ले लिया। इन सभी भाषाओं का प्रभाव कार्यालयी हिंदी पर पड़ना स्वाभाविक था। इसके अतिरिक्त हिंदी के और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द भी समाविष्ट हो गये। इस दृष्टि से प्रशासनिक हिंदी की शब्दावली पर विचार किया जा रहा है।

शब्द निर्माण में मुख्यत: संस्कृत को आधार के रूप में स्वीकार किया गया है। संस्कृत की संश्लिष्ट प्रकृति होने के कारण मूल शब्द या धातु के साथ उपसर्ग और प्रत्यय जोड़कर असंख्य शब्दों का निर्माण किया गया है जैसे विधि शब्द से विधिक, संविधि, विधान, संविधान, वैधानिक, संवैधानिक, विधायी, प्राविधान, विधेयक, विधायक, विधायिका आदि शब्दों की रचना हुई है जो एक ही रूपावली के अन्तर्गत आते हैं। इसी तरह सचिव शब्द को देखा जा सकता है। इसके आरंभ में अथवा बाद में कुछ जोड़कर सरकारी कार्यालयों में प्रयोग में आनेवाले पर्याप्त शब्द आसानी के साथ बन गये जैसे- उपसचिव, अपरसचिव, संयुक्त सचिव, संसदीय सचिव, निजी सचिव, महासचिव आदि। इसी भाँति सचिवालय, सचिवालयीय आदि शब्द भी बने।

फारसी शब्दों का भी कार्यालयी हिंदी में पर्याप्त मात्रा में प्रयोग होता है जैसे- दस्तावेज, जमानत, मिसिल, मंजूरी, बेदखली, मुचलका, बर्खास्तगी, पर्दाफाश आदि।

अंग्रेजी शब्दों का भी प्रशासनिक भाषा में बाहुल्य है और इस क्षेत्र में अपना बहुमूल्य स्थान बनाये हुए है जैसे- ग्रेड, कैडर, लीयन, ड्यूटी, गारण्टी, बोनस, चैक, पेंशन, बैंकिग, शेयर, क्लर्क आदि।

देशज शब्दों अर्थात हिंदी के सामान्य बोलचाल के अपने शब्दों का भी प्रयोग प्रशासनिक भाषा में देखने को मिलता है जैसे- छुट्टी, ठेका, निपटारा, भाड़ा, रसीद, कागजपत्र, खाता, भत्ता, घाटा, छूट आदि।

संस्कृत, ऊर्दू और अंग्रेजी- दो या तीन स्रोतों के मिश्रित शब्द भी प्राय: मिलते हैं। इन्हे संकर शब्द कहा जाता है जैसे- आर्थिक सलाहकार, बेबाकी पत्र, मतदान बूथ, उपस्थिति रजिस्टर, अपर-कलक्टर, रोजगार अधिकारी, अतिरिक्त –जिला मजिस्ट्रेट। इस प्रकार प्रशासनिक हिंदी में समान स्रोतीय घटकों से शब्द निर्माण का विशेष प्रतिबंध नहीं है। प्रशासनिक हिंदी की प्रक्रिया में कभी-कभी मूल शब्द एक स्रोत के होते हैं और उपसर्ग और प्रत्यय दूसरे स्रोत के। उदाहरणार्थ - डायरीकार, डिकीदार, स्टांपित, उपजिला, मुद्राबंद, तैनाती।

प्रशासनिक क्षेत्र में कुछ शब्द ऐसे भी प्रयुक्त होते हैं जिनका अर्थ सामान्यत: एक-सा लगता है और साधारण बोलचाल में ऐसे शब्दों के लिए हम एक ही शब्द से काम चला सकते हैं। परंतु जब कार्यक्रम की औपचारिकता का ध्यान रखते हुए यदि सरकारी प्रयोजनों के लिए उन शब्दों का प्रयोग किया जाए तो यह आवश्यक हो जाता है कि उनके लिए अलग-अलग शब्द प्रयोग में लायें। उदाहरणार्थ, आदेश, निदेश, अनुदेश, अध्यादेश, समादेश शब्दों को लाया जा सकता है जो क्रमश: अंग्रेजी का ऑर्डर, डायरेक्शन, इंस्ट्रक्शन,

ऑर्डिनेंस और कमांड के लिए प्रयोग में आते हैं। इसी तरह रिमार्क, कमेण्ट्स, ऑब्जर्वेशन, ओपिनियन आदि शब्दों का प्रयोग प्रशासनिक क्षेत्र में क्रमश: टिप्पणी, राय, मंतव्य, मत तथा विचार के अर्थ में होता है जबकि सामान्य बोलचाल में हम इन सबके लिए 'सलाह' शब्द से भी काम चला सकते हैं। अत: प्रशासनिक भाषा में शब्द-चयन में बड़ी सतर्कता आवश्यक है अन्यथा मूल सामग्री के अर्थ में परिवर्तन में देर नहीं लगेगी।

हिंदी में मशीन, डायरी, बस, कार, मोटर, बैंक, ड्रॉफ्ट, मनीऑर्डर, रेडियो, सिनेमा, गैस, कार्ड, मैंनेजर, कमीशन, बिल आदि शब्दों का प्रयोग धड़ल्ले से हो रहा है।

इसी तरह सलाहकार बोर्ड, सेमिनार-कक्ष जैसे शब्द सामान्य बोलचाल के अतिरिक्त प्रशासनिक कार्यों में पूरी तरह अपना लिये गये हैं। यहाँ तक कि कल के बदले 'मशीन' और सुई लगाना के बदले इंजेक्शन लगाना अधिक आसान प्रतीत होने लगा है। इतना ही नही, अंग्रेजी शब्द एटम शब्द से एटमी, मैनेजर शब्द से मैनेजरी, इंजीनियरिंग से इंजीनियरी और डॉक्टर से डॉक्टरी आदि शब्द हिंदी की प्रकृति के अनुरूप ढाल लिये गये।

स्पष्ट है कि संस्कृत की शब्दावली में नये शब्दों का निर्माण भले ही सुगम हो जाता हो परंतु ऐसे शब्द जो जनता की जबान पर चढ़ चुके हैं चाहे वे शब्द किसी भी भाषा के क्यों न हों, ये हिंदी को अधिक जीवंत और लोकप्रिय बनाने में तथा प्रशासनिक हिंदी को नयी दिशा देने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

डी. एम. आर. एल. में राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम तथा इसमें उल्लिखित दिशानिदेशों के अनुसार प्रयोगशाला राजभाषा कार्यान्वयन के दृष्टिकोण से हमारा यह प्रयास होता है कि अधिकाधिक कार्य हिंदी में किया जाए। वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान हिंदी में किये गये कार्यों का विवरण इस प्रकार है -

हिंदी कार्यशालाएँ : संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यशालाओं के माध्यम से हिंदी में प्रशिक्षित किया जा रहा है। प्रत्येक तिमाही में अलग-अलग कैडर के लिए कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं। इस वित्तीय वर्ष में कुल 4 कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं – पहली कार्यशाला 28.06.2024 को नवनियुक्त प्रशासनिक सहायक-ए, भंडार सहायक, तकनीशियन ए, फायरमैन, सुरक्षा सहायक आदि श्रेणी के लिए; द्वितीय कार्यशाला 29.08.2024 को प्रशासनिक वर्ग के लिए; तृतीय कार्यशाला दिनांक 29.11.2024 को वैज्ञानिक 'बी', तकनीकी अधिकारी 'सी', तकनीकी अधिकारी 'डी' एवं आशुलिपिकों आदि के लिए आयोजित की गयी तथा चतुर्थ कार्यशाला दिनांक 21.02.2025 को उन कार्मिकों के लिए आयोजित की गयी जिनको पिछले कुछ वर्षों के दौरान कार्यशाला में भाग लेने का अवसर नहीं मिला।

संयुक्त संगोष्ठी का आयोजन : संस्थान में हैदराबाद क्लस्टर-2 के अंतर्गत दिनांक 19 एवं 20 मार्च 2024 के दौरान 'संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक एवं तकनीकी संगोष्ठी' का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी हेतु कुल 60 लेख प्राप्त हुए जिसमें डीएमआरएल से लगभाग 17 लेख लिखे गये। इस संगोष्ठी में क्लस्टर की प्रयोगशालाओं सहित अन्य प्रयोगशालाओं द्वारा प्रतिभागिता दर्ज की गयी। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, हैदराबाद के निदेशक डॉ. विकास भाटिया ने मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर पर पधारकर चिकित्सा के क्षेत्र में हिंदी के बढ़ते प्रयोग के बारे में तथा सामान्य जनमानस को ध्यान में रखते हुए इसकी उपयोगिता के बारे में उपस्थित सभा को संबोधित किया।

तिमाही बैठकें : राजभाषा कार्यान्वयन के सुचारू अनुपालन की समीक्षा के उद्देश्य से निदेशक महोदय की अध्यक्षता में प्रत्येक तिमाही में बैठकें आयोजित की जाती हैं। इस वित्तीय वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीन बैठकें आयोजित की गयी हैं। यह बैठकें 24.06.2024, 24.09.2024 तथा 31.12.2024 को आयोजित की गयी। इस दौरान धारा 3(3) तथा हिंदी पत्राचार बढ़ाने पर विशेष रूप से चर्चा की गयी। इसके अतिरिक्त राजभाषा के आयोजनों तथा मुख्यालय से प्राप्त पत्र व समीक्षा पत्रों पर भी चर्चा की गयी।

नराकास की बैठकें : हमारा संस्थान 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति' का सदस्य है। अतः नराकास की बैठकों तथा अन्य गतिविधियों व विभिन्न आयोजनों में संस्थान द्वारा भाग लिया जाता है। पिछली बैठक दिनांक 05.09.2024 को आयोजित की गयी थी। ऐसी बैठकें राजभाषा कार्यान्वनय को गति प्रदान करती हैं।

हिंदी गृह पत्रिका : संस्थान में प्रत्येक वर्ष हिंदी गृह-पत्रिका प्रकाशित की जाती है। इस वित्तीय वर्ष 2024-25 के दौरान 'रचना' के नियमित अंक के साथ एक तकनीकी विशेषांक भी प्रकाशित किया गया है।

हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस : प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी डीएमआरएल में दिनांक 14 से 30 सितंबर 2024 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 14 व 15 सितंबर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस समारोह व चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में डीएमआरएल से प्रतिभागिता दर्ज की गयी। इसके पश्चात डीएमआरएल में हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया

गया। इन प्रतियोगिताओं के अंतर्गत स्वतंत्र लेख (तकनीकी), स्वतंत्र लेख (गैर-तकनीकी), निबंध लेखन, पठन, कविता पाठ, हिंदी टंकण, वाक् प्रतियोगिता, प्रारूप एवं टिप्पणी, श्रुतलेख, प्रश्नोत्तरी, अंत्याक्षरी आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी। इन प्रतियोगिताओं में 150 से अधिक हिंदी व हिंदीतर वर्ग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। दिनांक 30 सितंबर, 2024 को डीएमआरएल सभागृह में आयोजित हिन्दी दिवस तथा हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह में उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद से डॉ. संगीता कोटिया, सहायक प्रोफेसर को बतौर मुख्य अतिथि आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर डॉ. संगीता कोटिया जी के विचारों से अवगत होने का अवसर मिला, उन्होंने हिंदी के क्षेत्र में कार्य करते हुए अपने अनुभव साझा किए तथा हिंदी क्षेत्र में व्यापक अवसरों और इसके विस्तार के बारे में श्रोताओं को बताया। कार्यक्रम के अंत में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। अंततः मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न प्रदान कर उनका सम्मान किया गया। डॉ. आशीष पाठक, वैज्ञानिक 'ई' के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हिंदी पखवाड़ा समारोह संपन्न हुआ।

हिंदी प्रोत्साहन योजना : हिंदी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने के लिए 10 कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया। अधिकारियों को हिंदी में डिक्टेशन देने के लिये दिये जाने वाले पुरस्कार के अंतर्गत 02 पुरस्कार प्रदान किये गये।

डी. एम. आर. एल. गतिविधियों की झलकियाँ (हिंदी कार्यशालाएँ)

हिंदी पखवाड़ा समारोह

हिंदी पखवाड़ा समारोह – 2024
दिनांक - 14.09.2024 से 27.09.2024
रक्षा धातुकर्मीय अनुसंधान प्रयोगशाला
कंचनबाग, हैदराबाद

हिंदी दिवस - 2024
हिंदी पखवाड़ा समारोह

हिंदी पखवाड़ा समारोह

अखिल भारतीय संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक एवं तकनीकी संगोष्ठी, हैदराबाद क्लस्टर-2

वार्षिक दिवस समारोह

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

डॉ. आर बालमुरलीकृष्णन

उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं निदेशक

सदस्यगण

डॉ. के. गोपीनाथ, वैज्ञानिक-एच

डॉ. पार्थ घोषाल, वैज्ञानिक-जी

बी. रामकृष्ण, वैज्ञानिक-जी

डॉ. एम मणिवेल राजा, वैज्ञानिक-जी

सौम्य देब, वैज्ञानिक-जी

डॉ. आर. एस. सुब्रमणियन, वैज्ञानिक-जी

एन. चिट्टि बाबु, वैज्ञानिक-जी

डॉ. आदिराज श्रीनिवास, वैज्ञानिक-एफ

एस. शशिनाथ, वैज्ञानिक-एफ

डॉ. शिवनारायण साहू, वैज्ञानिक-एफ

अमित कुमार, वैज्ञानिक-एफ

रजनीश गोयल, वैज्ञानिक-एफ

डॉ. सरबजीत सिंह, वैज्ञानिक-एफ

सी. जयरामी रेड्डी, वैज्ञानिक-एफ

डॉ. वेंकट, वैज्ञानिक-एफ

डॉ. जी प्रभु, वैज्ञानिक-एफ

डॉ. हिमालय बासुमतारी, वैज्ञानिक-एफ

डॉ. ए. वेंकट रमण, वैज्ञानिक-एफ

विपिन कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी

अमित कुमार साहा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी-I

निरंजन कुमार मिश्रा, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी-I

जय प्रकाश, तकनीकी अधिकारी-ए

पवन कुमार, सहायक निदेशक(रा.भा.)

डिजाइन एवं मुद्रण

पब्लीकेशन एंड पोलिग्राफी यूनिट (पापु)
डी एम आर एल, हैदराबाद